सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 157 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार 14 जुलाई, 2026
मूल्य ₹ 3/-

हैप्पीनेस कोई रेडीमेड चीज नहीं है। ये आपके अपने कर्मों से आती है।
-ब्रह्माकुमारी शिवानी

भारत ने लॉर्ड्स टेस्ट में रचा... 7 | असम में चे ग्वेरा पर सियासी... 3 | भाजपा सरकार में पीडीए पर अत्याचार... 2

उप-चुनाव के त्रिकोण में फंस गयी बीजेपी

दतिया से लेकर बांकीपुर तक बीजेपी के लिए बुरी खबर

» दतिया में अपनों की नाराजगी बांकीपुर में प्रशांत किशोर की चुनौती, मांजलपुर में सीधी टक्कर

» क्या सत्ता के लिए यह सिर्फ तीन सीटों की लड़ाई है या 2029 की दस्तक?

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। विधानसभा चुनाव सिर्फ सिर्फ तीन सीटों पर हो रहा है लेकिन लेकिन दिल्ली से लेकर पटना भोपाल और गांधीनगर तक में राजनीतिक धड़कनें इतनी तेज हैं कि दूर से ही सुनाई दे रही है। भारतीय राजनीति में कई बार इतिहास लोकसभा से नहीं बल्कि उपचुनाव से लिखा गया है। आज सवाल सीटों का नहीं है सवाल उस संदेश का है जो जनता सत्ता को भेजना चाहती है।

एक तरफ मध्य प्रदेश का दतिया विधानसभा सीट है जहां कभी बीजेपी की ताकत माने जाने वाले नरोत्तम मिश्रा की बागावत ने अलाकमान के मांथे पर बल ला दिये हैं। दूसरी तरफ बिहार की बांकीपुर विधानसभा सीट जहां चुनावी रणनीति के मास्टरमाइंड प्रशांत किशोर पहली बार मैदान में उतरकर पूरे समीकरण को चुनौती दे रहे हैं। और तीसरी तरफ गुजरात का मांजलपुर है जहां कांग्रेस सीधे मुकाबले में है और बीजेपी अपने सबसे मजबूत किले में बढ़त बनाए रखने की कोशिश कर रही है।

सवाल उठता है

सवाल लाजमी है कि क्या यह सिर्फ तीन उपचुनाव हैं? या फिर जनता सत्ता को कोई बड़ा राजनीतिक संदेश देने की तैयारी कर रही है? राजनीति का पुराना सिद्धांत कहता है कि उपचुनाव में सरकार अपनी पूरी ताकत झोंकती है। प्रशासनिक प्रतिष्ठा भी दांव पर होती है संगठन की अग्निपरीक्षा भी होती है और नेतृत्व की विश्वसनीयता भी। लेकिन इस बार तस्वीर सामान्य नहीं दिख रही। दतिया में चुनौती बाहर से कम अंदर से ज्यादा दिखाई दे रही है। बांकीपुर में मुकाबला सिर्फ दलों का नहीं बल्कि नयी राजनीति बनाम पुरानी राजनीति का भी बताया जा रहा है। और गुजरात जहां बीजेपी का संगठन हमेशा उसकी सबसे बड़ी ताकत माना जाता है वहां भी विपक्ष मुकाबले को आसान मानने के मूड में नहीं है।

बांकीपुर प्रशांत किशोर की पहली बड़ी राजनीतिक परीक्षा

बिहार का बांकीपुर इस चुनाव का सबसे हाई प्रोफाइल मुकाबला बन चुका है। वर्षों तक दूसरों के चुनावी अभियान तैयार करने वाले प्रशांत किशोर अब खुद मैदान में हैं। यह चुनाव केवल एक सीट का नहीं बल्कि उनकी राजनीतिक विश्वसनीयता की पहली वास्तविक परीक्षा भी है। भाजपा ने शुरुआती उम्मीदवार अभिषेक कुमार बंटी का नाम वापस होने के बाद नीरज कुमार सिन्हा को मैदान में उतारा है। पार्टी का दावा है कि बांकीपुर उसका परंपरागत गढ़ है और संगठन के दम पर वह सीट बरकरार रखेगी। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने रेखा कुमारी को उम्मीदवार बनाया है। महागठबंधन स्थानीय मुद्दों, महंगाई, बेरोजगारी और सत्ता विरोधी माहौल को चुनावी मुद्दा बनाकर भाजपा को घेरने की कोशिश कर रहा है। सबसे अधिक चर्चा प्रशांत किशोर की है जो जन सुराज पार्टी के टिकट पर पहली बार स्वयं चुनाव लड़ रहे हैं।

मांजलपुर किला बचाने की चुनौती

गुजरात भारतीय जनता पार्टी का सबसे मजबूत राजनीतिक गढ़ माना जाता है। पिछले तीन दशकों से राज्य की सत्ता पर भाजपा का वर्चस्व कायम है और विधानसभा चुनावों में पार्टी लगातार बड़ी जीत दर्ज करती रही है। ऐसे में वडोदरा जिले की मांजलपुर विधानसभा सीट पर हो रहा उपचुनाव महज एक सीट का चुनाव नहीं बल्कि भाजपा की संगठनात्मक ताकत और राजनीतिक पकड़ की एक अहम परीक्षा माना जा रहा है। यह सीट विधायक योगेश पटेल के निधन के बाद खाली हुई थी जिसके चलते उपचुनाव कराया जा रहा है। भाजपा ने इस सीट पर जितेंद्रभाई वाघेला को उम्मीदवार बनाया है जबकि कांग्रेस ने भिखाभाई रबारी को मैदान में उतारकर सीधी चुनौती दी है। दोनों प्रमुख दल पूरे दमखम के साथ चुनाव प्रचार में जुटे हैं और इसे प्रतिष्ठा का मुकाबला मान रहे हैं। भाजपा के लिए चुनौती केवल सीट जीतने की नहीं है बल्कि यह साबित करने की भी है कि गुजरात में उसका पारंपरिक जनाधार और मजबूत संगठन पहले की तरह अटूट बना हुआ है। दूसरी ओर कांग्रेस इस उपचुनाव को स्थानीय मुद्दों, जनसंपर्क और सत्ता विरोधी भावनाओं के सहारे भाजपा के अभेद्य किले में सेंध लगाने के अवसर के रूप में देख रही है।

दतिया घर को आग लग गयी घर के चिराग से

मध्य प्रदेश का दतिया उपचुनाव सबसे ज्यादा इसलिए चर्चा में है क्योंकि यहां टिकट वितरण के बाद असंतोष की खबरें सुर्खियों में रहीं। पूर्व मंत्री नरोत्तम मिश्रा का नाम लगातार राजनीतिक बहस का हिस्सा बना हुआ है। विपक्ष इसी असंतोष को चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिश कर रहा है जबकि बीजेपी संगठन यह संदेश देने में जुटा है कि चुनाव व्यक्ति नहीं संगठन लड़ता है। यही वजह है कि दतिया अब केवल स्थानीय चुनाव नहीं रहा। यह इस बात की भी परीक्षा है कि क्या मजबूत संगठन आंतरिक असंतोष के बावजूद मतदाताओं को एकजुट रख सकता है। नरोत्तम मिश्रा अपना जोकि पूर्व गृहमंत्री रह चुके हैं और दबंगई के साथ राजनीति करते हैं का टिकट कटा और दतिया का पूरा बीजेपी संगठन उनके समर्थन में खड़ा हो गया।

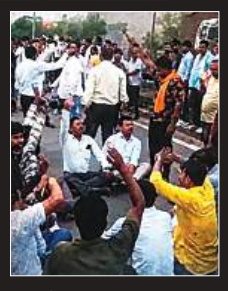

24 घंटे से ज्यादा समय तक विरोध प्रर्दशन हुए। लाठी चार्ज हुआ आंसू गैसे के गोले छोड़े गये। जर्बदस्त दबाव बनाने के बाद भी उनका टिकट नहीं बहाल हो सका। दतिया से भाजपा ने आशुतोष तिवारी को अपना प्रत्याशी बनाया है। वहीं कांग्रेस ने दो बार के विधायक रहे घनश्याम सिंह पर दांव लगाया है। घनश्याम सिंह राजघराने से जुड़े माने जाते हैं और दतिया की राजनीति में उनका अच्छा जनाधार माना जाता है। कांग्रेस का दावा है कि स्थानीय मुद्दों और भाजपा की अंदरूनी खींचतान का लाभ उसे मिलेगा। इस प्रकार दतिया का मुकाबला केवल आशुतोष तिवारी बनाम घनश्याम सिंह तक सीमित नहीं है बल्कि इसे भाजपा के संगठनात्मक अनुशासन नरोत्तम मिश्रा के प्रभाव और कांग्रेस की वापसी की कोशिश की भी परीक्षा माना जा रहा है।

भाजपा सरकार में पीडीए पर अत्याचार चरम पर : अखिलेश

» सपा प्रमुख ने योगी सरकार पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने फिर भाजपा सरकार व सीएम योगी पर हमला किया है। वहीं, भाजपा नेताओं का पलटवार है कि अपराध और अत्याचार पर सपा का बयान देना सिर्फ राजनीतिक हथकंडा है। उन्होंने आरोप लगाया है कि उत्तर प्रदेश की मौजूदा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार में पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) समाज पर अन्याय, अत्याचार और भेदभाव चरम पर है।

सपा प्रमुख का दावा है कि अत्याचार और उत्पीड़न बढ़ गया है। कानून व्यवस्था पूरी तरह चौपट है और सत्ता के संरक्षण में दबंग तथा अपराधी गरीबों व कमजोर वर्गों को प्रताड़ित कर रहे हैं। देवरिया में राजू विश्वकर्मा की हत्या और मेरठ में दलित छात्रा ललिता गौतम की निर्मम हत्या जैसी घटनाओं का हवाला देते हुए उन्होंने आरोप लगाया है कि पीडीए समुदाय लगातार हमलों का शिकार हो रहा है। उनका यह भी आरोप है कि पुलिस थानों में तैनाती के दौरान भी पीडीए वर्ग के अधिकारियों व कर्मचारियों की उपेक्षा की जाती है और उन्हें उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिलता।अखिलेश यादव का मानना है कि जब तक यह सरकार सत्ता से बाहर नहीं होगी, तब तक गरीबों और पीड़ितों को न्याय नहीं मिल सकता।

मंदिरों में चढ़ावे की सुरक्षा हो

बद्रीनाथ धाम में चढ़ावे की कथित चोरी के मामले में बद्री-केदार मंदिर समिति के निलंबित पर्सनल असिस्टेंट प्रमोद नौटियाल की गिरफ्तारी पर मेहरोत्रा ने कहा कि यह घटना भी मंदिरों में चढ़ावे की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े करती है. विभिन्न मंदिरों में नकदी, सोने-चांदी के सिक्कों और आभूषणों के गबन की घटनाएं सामने आ रही हैं. किसी सेवानिवृत्त या कार्यरत न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक स्वतंत्र आयोग गठित किया जाए, जो देश के प्रमुख मंदिरों में चढ़ावे और दान की व्यवस्था की निगरानी करे और ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने के उपाय सुझाए. उन्होंने बद्रीनाथ, काशी विश्वनाथ, श्रीकृष्ण जन्मभूमि, महाकाल और केदारनाथ जैसे प्रमुख मंदिरों का उल्लेख करते हुए आरोप लगाया कि इन ट्रस्टों के कामकाज की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए।

सपा विधायक ने राम मंदिर चढ़ावे चोरी पर भाजपा को घेरा

राम मंदिर चढ़ावे चोरी के मामले में सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई पर सपा विधायक रविदास मेहरोत्रा ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने इस पर सरकार और राम मंदिर ट्रस्ट से जवाब मांगा है। इसके साथ ही एसआईटी की जांच रिपोर्ट भी तलब की गई है। उन्होंने विश्वास जताया कि सुप्रीम कोर्ट सीबीआई जांच की मांग स्वीकार करेगा और मामले के कथित बड़े दोषियों का खुलासा होगा। राम मंदिर में मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) की नियुक्ति के लिए आवेदन मांगे जाने पर भी सपा विधायक ने सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि जब मंदिर में कथित चोरी के मामले की जांच जारी है और सुप्रीम कोर्ट में मामला विचाराधीन है, तब किसी भी नई नियुक्ति की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़नी चाहिए। अंतिम निर्णय से पहले नियुक्तियां होने से साक्ष्यों के प्रभावित हो सकते हैं।

कांग्रेस बरगद का पेड़ है तो उसके नीचे कोई दूसरा पौधा विकसित नहीं हो सकता : रविदास

सपा विधायक रविदास मेहरोत्रा ने कहा कि अगर कांग्रेस बरगद का पेड़ है तो उसके नीचे कोई दूसरा पौधा विकसित नहीं हो सकता, जबकि समाजवादी पार्टी आम के पेड़ की तरह है, जो छाया भी देता है और फल भी देता है। सपा सभी वर्गों को साथ लेकर चलने वाली पार्टी है, जबकि कांग्रेस अपने सहयोगी दलों के विकास में बाधा बनती रही है।

दो दिन से ज्यादा बीत गए पर अभी तक चुनाव आयोग से नहीं मिला जवाब : ममता

» पूर्व सीएम बोलीं- दूसरे गुट को और समय नहीं मिलना चाहिए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की प्रमुख ममता बनर्जी ने रविवार को प्रतिद्वंद्वी गुट के नेता ऋतब्रत बनर्जी को लेकर चुनाव आयोग को एक पत्र लिखा है। पत्र में ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग से अनुरोध किया है कि टीएमसी के प्रतिद्वंद्वी गुट के नेता ऋतब्रत बनर्जी को अधिकृत हस्ताक्षरकर्ताओं और संगठनात्मक चुनावों से जुड़े दावों पर जवाब देने के लिए और समय नहीं दिया जाना चाहिए।

पार्टी के भीतर जारी विवाद 2 जुलाई, 26 को उस समय और गहरा गया था, जब ऋतब्रत के नेतृत्व वाले गुट ने खुद को असली तृणमूल कांग्रेस बताते हुए चुनाव आयोग का रुख किया। इस गुट ने कहा था कि उसने 22 जून को आयोजित विशेष अधिवेशन के बाद आयोग को इसकी जानकारी दी थी और संगठन में किए गए कथित बदलावों को मान्यता देने का अनुरोध किया था। इस दावे के बाद चुनाव आयोग ने ममता बनर्जी और ऋतब्रत बनर्जी, दोनों को चिट्ठी भेजकर अपना-अपना जवाब दाखिल करने को कहा था, ममता बनर्जी के नेतृत्व वाले गुट ने 6 जुलाई, 2026 को अपना जवाब दाखिल कर दिया, जबकि चुनाव आयोग ने ऋतब्रत बनर्जी के गुट को जवाब दाखिल करने के लिए 10 जुलाई, 26 को शाम साढ़े पांच बजे (5.30 बजे) तक का समय दिया था।

पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने रविवार को चुनाव आयोग को लिखे पत्र में कहा, '10 जुलाई बीत जाने और उसके बाद करीब दो दिन गुजर जाने के बावजूद ऋतब्रत बनर्जी की तरफ से अब तक कोई जवाब नहीं भेजा गया है,' चुनाव आयोग ने दोनों पक्षों से कहा था कि वे अपने-अपने जवाब की जानकारी एक-दूसरे को भी भेजें.। पूर्व मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया, '10 जुलाई के बाद 48 घंटे और बीत जाने के बावजूद आपका कार्यालय पूरी तरह चुप्पी साधे हुए है, जिससे ऋतब्रत बनर्जी को और अवसर मिल रहा है और यह उनके दुर्भावनापूर्ण मकसद के प्रति आपके झुकाव को दर्शाता है।

बांकीपुर में नामांकन के बाद गिरफ्तार वीणा को जमानत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। नामांकन दाखिल करने के बाद गिरफ्तार की गई जनशक्ति जनता दल की उम्मीदवार वीणा मानवी को कोर्ट से राहत मिल गई है। वर्ष 837/209 के मामले में न्यायालय ने उनकी जमानत अर्जी स्वीकार करते हुए उन्हें बेल दे दी।

» तेज प्रताप ने कहा- चक्र चलेगा

वीणा मानवी ने सोमवार को अपना नामांकन दाखिल किया था। इसके बाद पुलिस ने उनके खिलाफ लंबित वारंट के आधार पर कार्रवाई करते हुए उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उधर बिहार के नेता तेज प्रताप ने कहा था चक्र चलेगा। गिरफ्तारी के बाद वीणा मानवी को न्यायालय में पेश किया गया, जहां वर्ष 2009 के कांड संख्या 837/209 से जुड़े मामले में कोर्ट ने उन्हें जमानत प्रदान कर दी। वीणा मानवी तेज प्रताप यादव की पार्टी जनशक्ति जनता दल की उम्मीदवार हैं। उनकी गिरफ्तारी और फिर कोर्ट से जमानत मिलने की घटना राजनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बनी हुई है। वीणा मानवी की गिरफ्तारी के बाद उनके समर्थकों और कार्यकर्ताओं ने जमकर विरोध किया। पुलिस ने उन्हें समझाने-बुझाने की काफी कोशिश की, लेकिन कार्यकर्ता नहीं माने। इसके बाद समाहरणालय परिसर के बाहर जमकर हंगामा हुआ। कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि सम्राट चौधरी सरकार ने साजिश के तहत वीणा मानवी को गिरफ्तार कराया। उनका कहना है कि बांकीपुर विधानसभा सीट से वीणा मानवी की जीत तय थी, इसलिए राजनीतिक साजिश के तहत उन्हें गिरफ्तार किया गया। कार्यकर्ताओं ने इस कार्रवाई को अन्यायपूर्ण बताया।

नेकां को कोई नजरअंदाज नहीं कर सकता : उमर

» सीएम ने बीजेपी के कानूनी नोटिस को प्रेमपत्र बताया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि उन्हें बीजेपी से कानूनी नोटिस के रूप में प्रेम पत्र पाकर सम्मान महसूस हुआ है। उन्होंने कहा कि इससे पता चलता है कि पार्टी उन्हें एक ऐसी राजनीतिक ताकत मानती है जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। यह बयान तब आया जब जम्मू-कश्मीर बीजेपी ने अब्दुल्ला को कानूनी नोटिस भेजा।

अब्दुल्ला ने आरोप लगाया था कि बीजेपी ने उनकी सरकार गिराने के लिए नेशनल कॉन्फ्रेंस के विधायकों को पैसे और मंत्री पद का लालच देने की कोशिश की थी। इस नोटिस के जवाब में, जिसमें आरोप साबित न कर पाने या सार्वजनिक रूप से माफ़ी न मांगने पर 100 करोड़ रुपये का मानहानि का मुकदमा करने की धमकी दी गई है, अब्दुल्ला ने कहा कि मुझे एक वकील से पत्र मिला है, एक इलेक्ट्रॉनिक कॉपी। मैं इसे बहुत बड़ा सम्मान मानता हूं क्योंकि जम्मू-कश्मीर में मैं अकेला ऐसा राजनेता हूं जिसे बीजेपी की तरफ से इस तरह का प्रेम पत्र मिला है। मैं इसे सम्मान की बात मानता हूं कि ज़ाहिर है, मैं जम्मू-कश्मीर में एक ऐसी राजनीतिक ताकत हूं जिसे वे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। अब्दुल्ला ने कहा कि उन्हें उम्मीद थी कि बीजेपी किसी राजनीतिक बयान का जवाब राजनीतिक तरीके से देगी, लेकिन उन्होंने आरोप लगाया कि इसके बजाय पार्टी ने कानूनी रास्ता चुना। उन्होंने कहा कि यह बीजेपी के लड़ने के तरीके का प्रतीक है। वे राजनीतिक लड़ाइयाँ लड़ते हैं और अदालतों की आड़ लेते हैं। मैं भी ऐसा ही बयान दे सकता था और विधानसभा की आड़ ले सकता था। मैं विधानसभा में ऐसे बयान देकर उन विशेषाधिकारों का फ़ायदा उठा सकता था जिन्हें विधानसभा के बाहर चुनौती नहीं दी जा सकती, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया।

नेशनल कॉन्फ्रेंस को बदनाम करने की कोशिश

मुख्यमंत्री ने यह भी आरोप लगाया कि जम्मू-कश्मीर में बीजेपी नेताओं ने हाल के महीनों में नेशनल कॉन्फ्रेंस और उसके नेतृत्व पर बार-बार बदनाम करने वाले आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि खासकर, एक नेता ने बार-बार हम पर बेबुनियाद और बदनाम करने वाले आरोप लगाए हैं, लेकिन हम राजनीतिक तौर पर उनका मुकाबला कर रहे हैं। अब हम उस खास बीजेपी नेता और कुछ अन्य लोगों को कानूनी नोटिस भेजने की प्रक्रिया शुरू करेंगे और देखते हैं कि यह प्रक्रिया कहां तक जाती है।

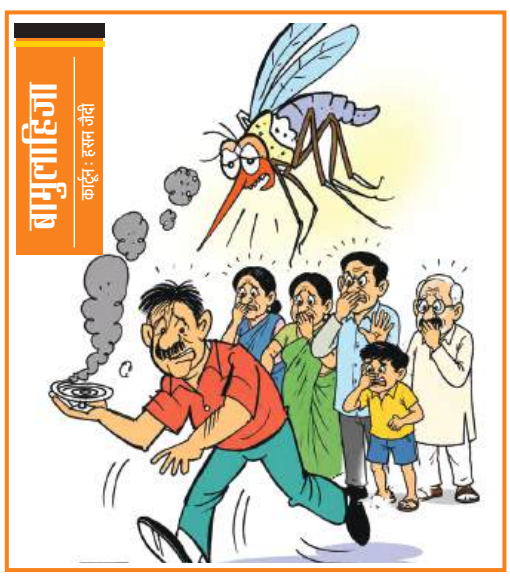

गठबंधन को लेकर ईमानदार नहीं है सपा : इमरान

» मुसलमानों के मुद्दों पर साधी है चुप्पी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। नयी दिल्ली में कांग्रेस के लोकसभा सदस्य इमरान मसूद ने समाजवादी पार्टी (सपा) की नीतियों पर तीखा हमला बोला है। मसूद ने आरोप लगाया कि अखिलेश यादव की अगुवाई वाली पार्टी मुसलमानों से जुड़े संवेदनशील मुद्दों पर चुप्पी साधे हुए है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि सपा आगामी उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के साथ गठबंधन करना चाहती है, तो उसे यह काम पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिए।

सहारनपुर के सांसद ने सवाल उठाया कि क्या मुसलमानों को केवल वोटबैंक के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है? उन्होंने कहा कि राज्य में मस्जिदों और मदरसों पर कार्रवाई हो रही है और समुदाय के साथ अन्याय हो रहा है, लेकिन सपा इन विषयों पर बोलने से कतराती है। मसूद ने यह भी जोड़ा कि दलितों पर हो रहे अत्याचारों पर भी पार्टी को मुखर होना चाहिए, लेकिन इसके बजाय सपा नेता लगातार उन्हीं पर निशाना साधते रहते हैं।मसूद ने गठबंधन की स्थिति पर जोर देते हुए कहा कि अगर समाजवादी पार्टी वास्तव में भारतीय जनता पार्टी का मुकाबला करना चाहती है, तो उसे गठबंधन को लेकर अपनी मंशा साफ करनी चाहिए और धरातल पर सक्रिय होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि विपक्ष की सरकार नहीं बनी, तो सबसे ज्यादा नुकसान मुस्लिम समुदाय को ही उठाना पड़ेगा। सांसद ने स्पष्ट किया कि सपा के साथ उनके निजी संबंधों में कोई कड़वाहट नहीं है, बल्कि वह केवल पार्टी को सच्चाई का आईना दिखा रहे हैं।

स्वामी मुकुंदानन्द गिरी महाराज से मिले अजय राय

लखनऊ। प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में आज बद्रीनाथ ज्योतिष्पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के शिष्य स्वामी मुकुंदानन्द गिरी महाराज ने आज प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री अजय राय जी पूर्व मंत्री से शिष्टाचार भेंट की। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने स्वामी जी का स्वागत किया और आशीर्वाद प्राप्त किया एवं वर्तमान समय में धार्मिक एवं सामाजिक विषयों पर चर्चा की।

असम में चे ग्वेरा पर सियासी घमासान!

» मुख्यमंत्री के बयान से भी बवाल

» बोले हिमंता- सार्वजनिक जगह पेंटिंग बनानी है, तो उल्फा चीफ परेश बरुआ की बनाओ!

अभिनेता जुबीन गर्ग के दीवार पर बनी पेंटिंग को हटाए जाने के बाद शुरू हुआ विवाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आजकल भाजपा का समय ठीक नहीं चल रहा है। भारत के हर राज्य में उसकी पार्टी में सियासी बवाल चल रहा है। तो कहीं उसके नेता अपने विवादित बयानों से पार्टी को असहज तो कर ही रहे हैं विपक्ष को भी निशाना बनाने का मौका दे रहे हैं। ताजा माला असम का जहां मौजूदा मुख्यमंत्री द्वारा भारत से अलग होने की वकालत करने वाले विद्रोही नेता को बढ़ावा देने वाले इस बयान ने राज्य में एक नया राजनीतिक और सांस्कृतिक विवाद खड़ा कर दिया है।

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने एक बेहद चौंकाने वाला और विवादित बयान दिया है। सीएम सरमा ने कहा है कि अगर असम के लोगों को सार्वजनिक स्थानों पर किसी क्रांतिकारी की तस्वीर बनानी ही है, तो उन्हें लातिन अमेरिकी मार्क्सवादी क्रांतिकारी चे ग्वेरा के बजाय प्रतिबंधित अलगाववादी संगठन उल्फा के चीफ परेश बरुआ की तस्वीर बनानी चाहिए। एक मौजूदा मुख्यमंत्री द्वारा भारत से अलग होने की वकालत करने वाले विद्रोही नेता को बढ़ावा देने वाले इस बयान ने राज्य में एक नया राजनीतिक और सांस्कृतिक विवाद खड़ा कर दिया है। यह पूरा विवाद असम के दिवंगत सांस्कृतिक आइकन, मशहूर गायक और अभिनेता जुबीन गर्ग के एक म्यूरल (दीवार पर बनी पेंटिंग) को हटाए जाने के बाद शुरू हुआ।

जुबीन गर्ग की अलग-अलग तरह की तस्वीरों पर रोक लगाने का संकेत

सरमा ने जुबीन गर्ग की अलग-अलग तरह की तस्वीरों पर रोक लगाने का भी संकेत दिया। उन्होंने कहा कि दिवंगत गायक-अभिनेता की पत्नी गरिमा सैकिया गर्ग ही उनकी तस्वीर का एक अधिकृत वर्शन जारी करेंगी, जिसका पालन सभी कलाकारों को करना होगा। यह पूरा विवाद जुबीन गर्ग के म्यूरल को लेकर है। सितंबर 25 में सिंगापुर में डूबने से हुई उनकी मौत के बाद असम में हफ्तों तक शोक का माहौल रहा और दुनिया की सबसे बड़ी अंतिम यात्राओं में से एक देखी गई। साथ ही यह भी जान सकते हैं कि कैसे असम में लाखों लोगों ने उनके गाने मायाबिनी को

दुख के सामूहिक गीत के तौर पर गाया था। गुवाहाटी के गणेशगुड़ी में फ्लाईओवर पर बनी जुबीन गर्ग की पेंटिंग को जून में हटा दिया गया था। यह कदम सौंदर्यीकरण अभियान के तहत उठाया गया था, क्योंकि उम्मीद थी कि जापानी प्रधानमंत्री सनाए तकाइची अपनी भारत यात्रा के दौरान राज्य का दौरा करेंगी। हालांकि, तकाइची का असम दौरा आखिरकार नहीं हो पाया। जुबीन की पेंटिंग हटाए जाने से राज्य में भारी विवाद खड़ा हो गया, क्योंकि यहाँ इस गायक-अभिनेता को सांस्कृतिक आइकन के तौर पर पूजा जाता है। हालाँकि, जल्द ही मार्शल बरुआ ने जुबीन की एक नई पेंटिंग बनाई, वही कलाकार जिन्होंने मूल म्यूरल बनाया था।

पेंटरों ने पुलिस स्टेशन में अपना बयान दर्ज कराया

सरमा ने कहा कि जिन लोगों ने पेंटिंग हटाई, वे असली असमी लोग थे। उन्होंने सरमा को बताया कि वे पहचान नहीं पाए थे कि पेंटिंग जुबीन की है, क्योंकि वह चे ग्वेरा स्टाइल में बनाई गई थी। शर्मा ने कहा, दोनों पेंटरों ने पुलिस स्टेशन में अपना बयान दर्ज कराया कि उन्होंने म्यूरल (दीवार पर बनी पेंटिंग) को इसलिए मिटा दिया क्योंकि वह जुबीन गर्ग जैसी नहीं लग रही थी। वे मुस्लिम या बांग्लादेशी-मिया नहीं हैं, बल्कि असमिया पेंटर हैं। जिस कॉन्ट्रैक्टर ने यह काम लिया था, वह भी असमिया है और तीनों ही जुबीन के फ़ैन हैं। इसके बाद शर्मा ने सुझाव दिया कि अगर क्रांतिकारियों की तस्वीरें बनानी ही हैं, तो असम के क्रांतिकारियों जैसे परेश बरुआ और एक्टिविस्ट पराग दास की तस्वीरें बनाई जानी चाहिएं।

'असम के क्रांतिकारियों की तस्वीरें बनानी चाहिएं'

शर्मा ने कहा, अगर आप किसी क्रांतिकारी की तस्वीर बनाना चाहते हैं, तो परेश बरुआ की बनाएं। वह 30 सालों से अपना संघर्ष जारी रखे हुए हैं - चाहे वह सही हो या गलत, यह अलग बात है। उन्हें अपने परिवार से दूर रहना पड़ता है। पराग दास की तस्वीरें बनाएं। जहाँ बरुआ विदेश (म्यांमार या चीन) से उल्फा विद्रोह को चला रहे हैं, वहीं 1996 में असम में हुई सीक्रेट किलिंग्स (गुप्त हत्याओं) के दौरान पराग दास की हत्या कर दी गई थी। शर्मा ने कहा, हो सकता है कि मैं बरुआ को स्वीकार न करूँ और उनकी निंदा भी करूँ, लेकिन अगर किसी को क्रांतिकारियों की तस्वीरें बनानी हैं, तो उन्हें असम के क्रांतिकारियों की तस्वीरें बनानी चाहिएं। हालाँकि, भारत से अलग होने की वकालत करने वाले और 80 और 90 के दशक में असम में सैकड़ों हत्याओं के

लिए जिम्मेदार समूह से जुड़े विद्रोही को एक मौजूदा मुख्यमंत्री द्वारा बढ़ावा दिए जाने की बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। जहाँ शर्मा ने बरुआ को बढ़ावा दिया, वहीं उन्होंने ग्वेरा को कमतर आंका ग्वेरा एक अर्जेंटीना के क्रांतिकारी थे जिन्हें दुनिया भर के युवा एक आइकन मानते हैं। शर्मा ने कहा कि विवाद से पहले उन्हें ग्वेरा के बारे में जानकारी नहीं थी, लेकिन बाद में उन्होंने फिदेल कास्त्रो और उनके भाई राउल के नेतृत्व वाली क्यूबा की क्रांति से गहराई से जुड़े इस क्रांतिकारी के बारे में पढ़ा।

चे ग्वेरा, फिदेल और राउल की चर्चा

चे ग्वेरा मेक्सिको में फिदेल और राउल के साथ शामिल हुए, 1956 में क्यूबा पहुँचे और आखिरकार एक गुरिल्ला सेना का नेतृत्व किया जिसने अमेरिका समर्थित फुल्गेंशियो बतिस्ता की सरकार को उखाड़ फेंका और इस दक्षिण अमेरिकी देश में कम्युनिस्ट शासन की स्थापना की। सरमा ने कहा चे ग्वेरा कौन हैं? मैं क्यूबा गया हूँ और मैंने उनके बारे में पढ़ा है। वहाँ ज्यादातर ड्रग्स का कारोबार होता है। हमारा उनसे क्या लेना-देना है? लोग क्यूबा नहीं जा सकते, वहाँ भारतीय दूतावास सिर्फ एक सोलर पावर सोर्स से चलता है। वहाँ न तो सड़कें हैं और न ही पानी की सप्लाई। असम की तुलना ऐसे देश से कैसे की जा सकती है?।

सार्वजनिक जगहों पर पेंटर्स को जुबीन गर्ग की सिर्फ एक खास तस्वीर बनाने की इजाजत

सरमा ने यह भी संकेत दिया कि सरकार कम से कम सार्वजनिक जगहों पर पेंटर्स को जुबीन गर्ग की सिर्फ़ एक खास तस्वीर बनाने की इजाजत देगी। उन्होंने कहा कि उनकी सभी पेंटिंग और तस्वीरें गरिमा सैकिया गर्ग की मंजूरी वाली तस्वीर पर आधारित होनी चाहिए। गरिमा ने म्यूरल (दीवार पर बनी पेंटिंग) को हटाने पर सवाल उठाया था और पूछा था कि क्या जुबीन की तस्वीर की वजह से गुवाहाटी गंदा लग रहा था या फिर इसकी जरूरत ही नहीं थी। जहां सरमा ने कहा कि वे चे ग्वेरा के बारे में नहीं जानते थे, वहीं जुबीन गर्ग ने कहा कि उन्हें उस क्रांतिकारी से प्रेरणा मिली। लेकिन सबसे दिलचस्प बात यह है कि मुख्यमंत्री ने जिस कलाकार को SFI का बताया था, उसे नीचा दिखाने के चक्कर में सरमा ने अनजाने में ही एक विद्रोही संगठन के प्रमुख को बढ़ावा दे दिया, जो आज भी भारत से असम को अलग करने के लिए लड़ रहा है।

एसएफआई से कोई लेना-देना नहीं : पेंटर मार्शल बरुआ

दक्षिण-एशियाईऔर प्रवासी असम के मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि पेंटर मार्शल बरुआ के छात्र संगठन, स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के सदस्य थे। हालाँकि, मार्शल बरुआ, जो ग्वेरा जैसी टोपी पहनते हैं, ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में

कहा कि एसएफआई से उनका कोई लेना-देना नहीं है। बरुआ ने कहा, मैं यह टोपी इसलिए पहनता हूँ क्योंकि मुझे चे ग्वेरा पसंद हैं। वीडियो में बरुआ ने कहा, चे को पसंद करने की एक मुख्य वजह यह है कि वह एक असाधारण रोमांटिक इंसान थे। अगर वह रोमांटिक नहीं होते, तो लोगों के लिए लड़ते ही नहीं।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

आभासी दुनिया से निकल वास्तविक संसार में आने का समय

आज विश्व में हर तरफ चुनौतियों की भरमार हो गई। इसका असर भारत पर भी आ गया है। डिजिटल दुनिया, इंटरनेट, सोशल मीडिया और आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी का एक ऐसा विशाल नेटवर्क है, जिसने वैश्विक स्तर पर सूचनाओं के आदान-प्रदान को बेहद आसान बना दिया है। या आभासी दुनिया लोगों को मानसिक बीमार कर रहा है। समाजिक संस्थाओं को ऐसे उपाय करने होंगे जिससे लोग निकल कर अपने सुरक्षित महसूस करें। डिजिटल एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जहां दुनिया भर के लोग एक क्लिक पर आपस में जुड़ जाते हैं। हालांकि, यह दुनिया काफी हद तक अवास्तविक है। यहां प्रस्तुत की जाने वाली जिंदगियां, खबरें और तस्वीरें आमतौर पर फिल्टर और कृत्रिमता का शिकार होती हैं, जो जमीनी हकीकत और वास्तविक जीवन से कोसों दूर एक काल्पनिक मृगतृष्णा प्रस्तुत करती हैं। इस अवास्तविक दुनिया में मौजूद अप्रमाणित सामग्री युवाओं को तेजी से नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। सोशल मीडिया की लत उनमें बेचैनी, हीन भावना और समय की बर्बादी का कारण बन रही है।

धार्मिक और वैचारिक दृष्टिकोण से भी यह एक कठिन चुनौती है। इंटरनेट पर मौजूद भ्रामक सामग्री और गलत विचारधाराएं अपरिपक्व दिमाग वाले युवाओं को आसानी से अपना शिकार बना लेती हैं, जिससे उनकी सही मान्यताओं और नैतिक मूल्यों के आहत होने का गंभीर खतरा बना रहता है। 21वीं सदी में चरमपंथ की प्रकृति तेजी से बदल चुकी है। अतीत में चरमपंथी विचारधाराएं सीमित हलकों, गुप्त बैठकों या प्रतिबंधित साहित्य के माध्यम से फैलाई जाती थीं, लेकिन अब इंटरनेट और सोशल मीडिया ने इस प्रक्रिया को वैश्विक और त्वरित बना दिया है। आज मोबाइल फोन की स्क्रीनें भी वैचारिक संघर्ष का हिस्सा बन चुकी हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म ऐसे माध्यम बन गए हैं, जहां भड़काऊ विचार, धार्मिक कट्टरपंथ और नफरत पर आधारित दुष्प्रचार युवाओं तक बहुत तेजी से पहुंचता है। भारत जैसे बहुधार्मिक और विविधतापूर्ण समाज में यह मुद्दा और भी संवेदनशील हो जाता है। इसीलिए ऑनलाइन फैलने वाले चरमपंथी नैरेटिव को समझना केवल सुरक्षा का मामला नहीं है, बल्कि एक वैचारिक और सामाजिक जिम्मेदारी भी है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों की एक बड़ी विशेषता यह है कि वे उपयोगकर्ता की रुचि के अनुसार सामग्री प्रस्तुत करते हैं। यही प्रणाली कभी-कभी 'इको चैंबर्स' या सीमित वैचारिक दायरों का रूप ले लेती है।

"डिजिटल एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जहां दुनिया भर के लोग एक क्लिक पर आपस में जुड़ जाते हैं। हालांकि, यह दुनिया काफी हद तक अवास्तविक है। यहां प्रस्तुत की जाने वाली जिंदगियां, खबरें और तस्वीरें आमतौर पर फिल्टर और कृत्रिमता का शिकार होती हैं, जो जमीनी हकीकत और वास्तविक जीवन से कोसों दूर एक काल्पनिक मृगतृष्णा प्रस्तुत करती हैं।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

स्याह दौर को याद करके उबरने का समय

ज्योति मल्होत्रा

पिछले कुछ हफ्तों से जिंदगी, दो कलाकृतियों में उतरने की कोशिश कर रही है, यह समझने के लिए कि दशकों पहले क्या हुआ। इम्तियाज अली की 1947 में देश के विभाजन पर बनी फिल्म 'मैं वापस आऊंगा', जो 80 साल पीछे जाकर उन लोगों की कहानी बताती है, जिन्हें एक घर से दूसरे घर की तलाश में खुद की जड़ें उखाड़ने को मजबूर किया गया था, सदा के लिए 'रिफ्यूजी' का ठप्पा लेकर - लाहौर में छोड़े गए मॉडल टाउन की याद में दिल्ली के बाहरी इलाके में उसकी नकल कर बनाए मॉडल टाउन में बसना, जो कि दिल्ली यूनिवर्सिटी से काफी दूर है; लायलपुर नाम के शहर में अपने घर की याद में, जो अब है ही नहीं, जालंधर में बनाए लायलपुर सीनियर सेकेंडरी गर्ल्स स्कूल जैसे स्कूलों में अपने बच्चों को भेजना। लायलपुर का नया नाम पिछले कुछ सालों से फैसलाबाद हो गया है, लेकिन जालंधर में लोगों को कौन समझाए।

याददाश्त के साथ यही समस्या है- आपने जो अपनी आंखों से देखा हो, वह ओझल नहीं हो पाता या जो सुनी थीं, वह आवाजें भुलाए नहीं भूलतीं। भले ही आप उसे व्यक्तिगत रूप से देख या सुन नहीं सकते हों, लेकिन विगत की यादें असहज दु:स्वपन बनाने के लिए काफी होती हैं। चंडीगढ़ में मेरे मित्र अपने माता-पिता को 'मैं वापस आऊंगा' दिखाने से कतरा रहे हैं, कि कहीं ऐसा न हो कि वे उस आघात को पुन: जीएं, जिससे वे गुजर चुके हैं। ऐसा नहीं है कि पंजाब आघातों से अपरिचित है। 'बदला और सुलह' यह दो भाव, जैसा कि राजमोहन गांधी ने इसी नाम की अपनी किताब में बहुत भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है, पंजाब में इनकी गूंज दशकों, यहां तक कि सदियों तक रही है। यदि दिल्ली 'सोने की चिड़िया' किसी लुटेरे की महत्वाकांक्षा की पराकाष्ठा है, तो उस तक पहुंचने का रास्ता पंजाब से होकर है और इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए पंजाब की सभी नदियों को पार करना पड़ता था। कुछ को अपनी मंजिल तक पहुंचने से पहले ही रोक लिया गया, इनमें सर्वाधिक उल्लेखनीय है ईसा पूर्व 326 में सिकंदर का विश्व विजय अभियान रथ रोक देना - पंजाब में रोके जाने के बाद उसे उल्टी दिशा पकड़नी पड़ी और वापस लौट गया।

यह भारत का एकमात्र राज्य है जिसके नाम के साथ 'द' आर्टिकल लगाना जरूरी होता है। इस बीच, समय की धारा अपने साथ, इसकी नदियों की भांति, हमलावरों, घुसपैठियों,

लोकतंत्रवादियों, हत्यारों, आतंकवादियों, सशस्त्र विद्रोहियों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को बहाती चली गया- यह सूची अंतहीन है, जिसमें हर किस्म के चाहे-अनचाहे पाप शामिल हैं। इन दिनों, जबकि मॉनसून पूरे देश में छा चुका है, हमारी नदियां उफान पर हैं। चिनाब, जिसे आज भी पंजाब की नदी कहा जाता है, हालांकि यह 1947 के बाद से भारतीय पंजाब की सीमा से परे बहती है, पाकिस्तानी पंजाब में घुसने से पहले जम्मू इलाके में अपने किनारों पर दहाड़ती है आप इसके बहाव को रोक नहीं सकते। ऑपरेशन सिंदूर से पहले हो या बाद में, भूगोल राजनीति का गुलाम नहीं हो सकता। चिनाब की बात की जाए तो, सतलुज का जिक्र कैसे छूट सकता है- यहां नदी नहीं, फिल्म की बात है। पूरे पंजाब ने इसे देख लिया है, या देख रहा है- गांव की कमेटियों द्वारा लगाई गई बड़ी स्क्रीन पर, किसी गुरुद्वारे के साए में या खुले मैदान में, शाम ढलने के बाद, केंद्र द्वारा लगाया प्रतिबंध नजरअंदाज करते हुए। यहां तक कि दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी भी राजधानी के बीचोंबीच इसके शो चला रही है। यह अजीब विडंबना है। हर राजनीतिक दल सावधानीपूर्वक निगाह रखे हुए है, क्योंकि चुनाव में मुश्किल से छह माह बचे हैं, उनमें से हर कोई अच्छी तरह जानता है कि अगर वे सही बात नहीं कहेंगे, या सही शब्दों का इस्तेमाल नहीं करेंगे, तो वे राज्य में चल रही भावनाओं की लहर में बह सकते हैं। 'हर कोई सब कुछ जानता है, उन सालों में क्या हुआ था'। लेकिन असल में इसका मतलब क्या है? सतलुज में ऐसा क्या है जिसने पंजाब की संवेदनाओं को छू दिया है? क्या केंद्र सरकार के प्रतिबंध का सच में मतलब है कि यह बहुत जल्दबाजी में लिया निर्णय है, कि पंजाब को अपनी भयावहता को देखने के लिए कुछ और दशक चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे 'मैं वापस आऊंगा' ने 80 साल बाद किया है, और यह कि अंधियारे को न छेड़ना ही बेहतर है, चुनौती देना तो दूर की बात।

आखिर, सच तो यह कि दिलजीत दोसांझ 'पिंड' में अपने घर नहीं, बल्कि 'अमेरिका' में रहते हैं। डर यह है कि पंजाब में फिर से कहीं दरार पैदा न हो जाए। लोग दो पक्षों में बंट जाएंगे। यह आलोचना कि फिल्म 'बहुत ज्यादा एकतरफा' है, इसका असल में मतलब है कि सिर्फ एक पक्ष, मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालड़ा का पक्ष ही सामने रखा गया है।

विधिक बिरादरी के लिए वेकअप कॉल

डॉ. सुधीर कुमार

कानून स्थिर नहीं है, यह जीवित है और समय के साथ बदलता रहता है। एक वकील के लिए उसकी डिग्री केवल एक प्रवेश द्वार है, लेकिन असली परीक्षा अदालत के फर्श पर हर दिन होती है। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में अजय विज बनाम इंडियन बैंक्स एसोसिएशन (2026) मामले में जो टिप्पणी की, वह महज एक न्यायिक आदेश नहीं है, बल्कि भारतीय विधिक बिरादरी के लिए एक अत्यंत गंभीर वेकअप कॉल है। यह मामला केवल एक वकील का निजी विवाद नहीं, बल्कि भारतीय न्याय प्रणाली की एक गंभीर खामी को उजागर करने वाला एक ऐतिहासिक घटनाक्रम है। एक वकील की कानूनी राय को लापरवाही मानकर उसे कॉशन लिस्ट में डालना, वकील की बदलती भूमिका और उसकी व्यावसायिक जवाबदेही पर बड़े प्रश्नचिह्न लगाता है।

यह निर्णय बताता है कि वकील अब केवल अपने मुवक्किल का पक्ष रखने वाला व्यक्ति नहीं रह गया है, बल्कि वह एक विशेषज्ञ बन गया है, जिसकी एक छोटी-सी गलती भी पूरी न्याय व्यवस्था की साख पर सवाल खड़ा कर सकती है। आज के डिजिटल युग में, जहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और बदलता वैश्विक परिदृश्य कानून के स्वरूप को निरंतर नया आकार दे रहे हैं, क्या केवल पुरानी किताबों के ज्ञान से न्याय की रक्षा संभव है? सुप्रीम कोर्ट का यह निर्देश कि वकीलों के लिए कंटीन्यूइंग लीगल एजुकेशन अनिवार्य हो और एक नेशनल लीगल एकेडमी की स्थापना की जाए, भारतीय न्याय व्यवस्था की गुणवत्ता को वैश्विक स्तर पर ले जाने की दिशा में एक साहसी और दूरदर्शी कदम है। कानून का पेशा केवल बहस करना नहीं है, बल्कि यह एक पवित्र विश्वास है, जिसे बनाए रखने के लिए निरंतर विकास अनिवार्य है। आज के इस ज्ञान युग में, कानूनों, तकनीक और विनियामक ढांचों में इतनी तेजी से बदलाव हो रहे हैं कि वर्षों पहले अर्जित किया गया ज्ञान आज पूरी तरह अप्रासंगिक हो सकता है।

इसके साथ ही, कानूनी क्षेत्र में तकनीकी पिछड़ापन एक बड़ी चुनौती बना हुआ है, जिसे दूर करना समय की मांग है। आज के आधुनिक वकील के लिए ई-कोर्ट्स, वर्चुअल हियरिंग, ऑनलाइन केस मैनेजमेंट और कानूनी डेटा विश्लेषण में दक्ष होना केवल कौशल का प्रदर्शन नहीं, बल्कि आवश्यकता है। इसके अलावा, अदालती शिष्टाचार, मुवक्किल के प्रति जवाबदेही और अनैतिक प्रथाओं पर अंकुश लगाने के लिए निरंतर नैतिक प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है, ताकि इस पेशे की गरिमा हमेशा बनी रहे। अमेरिका और कनाडा जैसे देशों में मैन्डेटरी कंटीन्यूइंग लीगल एजुकेशन लागू है। वहां वकीलों के लिए अपने लाइसेंस को बनाए रखने हेतु हर साल निश्चित घंटों की कानूनी शिक्षा या सेमिनार में भाग लेना अनिवार्य होता है। इसी तरह, सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया में बार एसोसिएशन और सरकार के सहयोग से निरंतर पेशेवर विकास कार्यक्रमों को कड़ाई से लागू किया जाता है, जहां इन क्रेडिट्स को पूरा न करने पर वकील के अभ्यास करने के अधिकार को अस्थायी रूप से निलंबित तक किया जा सकता है। भारत में कानूनी पेशे का विस्तार तेजी से हुआ है, लेकिन गुणवत्ता उस अनुपात में नहीं बढ़ सकी है। आज देश में वकीलों की संख्या 20 लाख के आंकड़े को पार कर गई है और हर वर्ष हजारों युवा कानून की डिग्री लेकर इस क्षेत्र में आ रहे हैं।

दूसरी ओर, भारतीय अदालतों में लंबित मामलों का बोझ 5 करोड़ से भी अधिक हो चुका है। वकीलों की संख्या में अनियंत्रित वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति प्रोफेशनल स्किल डेवलपमेंट के अवसर सीमित हो गए हैं। नेशनल लीगल एकेडमी का उद्देश्य केवल वकीलों की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि उन्हें निरंतर प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन के माध्यम से सक्षम वकीलों की फौज में बदलना है। यह एकेडमी नए वकीलों के लिए एक मेंटरशिप हब के रूप में कार्य करेगी, जहां वरिष्ठ अधिवक्ता अपने व्यावहारिक अनुभव साझा करेंगे। इस प्रयास से किताबी ज्ञान और अदालती हकीकत के बीच की खाई मिटेगी और मुकदमों के जल्द निस्तारण की दर में 15 से 20 प्रतिशत तक की महत्वपूर्ण वृद्धि संभव हो सकेगी। बार काउंसिल ऑफ इंडिया को कानूनी पेशे के मानकों को ऊंचा उठाने के लिए एक सुपर-रेगुलेटर के रूप में अपनी भूमिका को सशक्त बनाना होगा। इसके कार्यान्वयन हेतु सबसे पहले वकीलों के लिए एक अनिवार्य क्रेडिट-आधारित प्रणाली लागू की जानी चाहिए, जिसके तहत हर वकील के लिए प्रतिवर्ष 20 से 30 घंटे का प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य हो।

इस शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए एक हाइब्रिड लर्निंग मॉडल अपनाना आवश्यक है, जहां नेशनल लीगल एकेडमी को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से जोड़कर दूरदराज के क्षेत्रों के वकीलों तक पहुंचाया जा सके। एकेडमी की सफलता के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी का मॉडल सबसे प्रभावी होगा। इसमें शीर्ष लॉ फर्मों और अनुभवी वकीलों को गेस्ट लेक्चरर के रूप में जोड़कर व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जा सकता है। न्यायिक प्रणाली में नेशनल लीगल एकेडमी की स्थापना एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो कानूनी पेशे को केवल पढ़ाई तक सीमित न रखकर इसे एक थिंक टैंक में बदल सकती है। बार काउंसिल ऑफ इंडिया को इसे अधिकारों के हनन के बजाय अधिकारों के विस्तार के रूप में देखना चाहिए।

भीषण गर्मी में भी खराब नहीं होंगे ये टिफिन

इडली और सूखी नारियल चटनी

साउथ इंडियन फूड में इडली सबसे हल्का और सुरक्षित टिफिन माना जाता है। हालांकि नारियल की गीली चटनी जल्दी खराब हो सकती है, इसलिए सूखी नारियल चटनी का इस्तेमाल करें। इडली पेट के लिए हल्की होती है और गर्मी में पाचन भी बेहतर रखती है। बच्चों और दफ्तर जाने वालों दोनों के लिए यह शानदार विकल्प है।

गर्मी का मौसम आते ही सबसे बड़ी परेशानी होती है टिफिन में रखें भोजन का लंबे समय तक ताज़ा रखना। दफ्तर, स्कूल या सफर के दौरान कई बार खाना कुछ घंटों में ही खराब होने लगता है, जिससे स्वाद भी बिगड़ता है और स्वास्थ्य पर भी असर पड़ सकता है। खासकर मई-जून की भीषण गर्मी में दही, क्रीम, ग्रेवी या ज्यादा मसालेदार चीजें जल्दी खराब हो जाती हैं। ऐसे में हर घर में यही सवाल रहता है कि आखिर टिफिन में क्या रखें जो स्वादिष्ट भी हो, हेल्दी भी और लंबे समय तक फ्रेश भी बना रहे। अगर आप भी रोज-रोज एक ही तरह का सूखा खाना पैक करके परेशान हो चुके हैं, तो अब चिंता छोड़ दीजिए। यहां आपको कुछ ऐसी टिफिन रेसिपीज़ बताई जा रही हैं, जो तेज गर्मी में भी जल्दी खराब नहीं होतीं। ये रेसिपीज बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को पसंद आएंगी और इन्हें बनाना भी बेहद आसान है।

सुबह बनाएं शाम तक रहेंगे फ्रेश

बेसन चीला रोल

बेसन से बनी चीजें गर्मी में अपेक्षाकृत ज्यादा सुरक्षित मानी जाती हैं। आप बेसन चीला बनाकर उसमें सूखी सब्जियां रोल की तरह भर सकते हैं। यह बच्चों के टिफिन के लिए भी परफेक्ट विकल्प है। बेसन में मौजूद प्रोटीन शरीर को ऊर्जा देता है और यह लंबे समय तक पेट भरा रखता है। इसे हरी चटनी की जगह सूखी लहसुन चटनी के साथ रखें।

सत्तू पराठा और आम का अचार

बिहार और यूपी में गर्मी के मौसम में सत्तू बेहद लोकप्रिय माना जाता है। सत्तू पराठा लंबे समय तक खराब नहीं होता और शरीर को ठंडक भी देता है। इसमें प्याज कम रखें और अचार के साथ सर्व करें। सत्तू में भरपूर फाइबर और प्रोटीन होता है, जिससे दिनभर एनर्जी बनी रहती है। सफर के दौरान भी यह सबसे भरोसेमंद टिफिन विकल्प खाना माना जाता है।

वेज पुलाव और भुनी मूंगफली

अगर आप कुछ हल्का लेकिन पेट भरने वाला खाना चाहते हैं, तो वेज पुलाव बेस्ट रहेगा। इसमें ज्यादा ग्रेवी नहीं होती और यह लंबे समय तक खराब नहीं होता। पुलाव में बीन्स, गाजर और मटर जैसी सब्जियां डालें और साथ में भुनी हुई मूंगफली रखें। इससे स्वाद भी बढ़ेगा और प्रोटीन भी मिलेगा। ध्यान रखें कि पुलाव पूरी तरह ठंडा होने के बाद ही पैक करें।

मसाला पराठा और सूखी आलू भुजिया

भीषण गर्मी में सबसे सुरक्षित टिफिन विकल्प माना जाता है मसाला पराठा। इसमें कम नमी होती है, जिससे यह जल्दी खराब नहीं होता। आप आटे में अजवाइन, नमक, हल्दी और थोड़ा सा तेल डालकर पराठा बना सकते हैं। इसके साथ सूखी आलू भुजिया रखें, जिसमें प्याज और टमाटर कम इस्तेमाल करें। यह कॉम्बिनेशन 6-7 घंटे तक आसानी से फ्रेश रहता है।

हंसना मना है

अभी सुबह न जाने किसका मुंह देखकर उठा था कि दिन का भोजन नसीब नहीं हुआ? पत्नी बोली-मेरी मानो, बेडरूम में लगे आइने को हटा दो, वरना रोजाना यही शिकायत रहेगी।

हीरालाल ने कहा- मेरी पत्नी विवाह की वर्षगांठ जन्मतिथि के रूप में मनाती है। दोस्त बोला- और आप? हीरालाल-मैं तो जिंदगी की पुण्यतिथि के रूप में।

टीचर- होम वर्क क्यों नहीं किया? स्टूडेंट- सर, लाइट नहीं थी। टीचर- तो मोमबत्ती जला लेते। स्टूडेंट- सर, माचिस नहीं थी। टीचर- माचिस क्यों नहीं थी? स्टूडेंट- पूजा घर में रखी थी। टीचर- तो वहां से ले आते स्टूडेंट- नहाया हुआ नहीं था, टीचर- नहाया क्यों नहीं था? स्टूडेंट- पानी नहीं था सर। टीचर- पानी क्यों नहीं था? स्टूडेंट- सर मोटर नहीं चल रही थी। टीचर- मोटर क्यों नहीं चल रही थी? स्टूडेंट-बताया तो था लाइट नहीं थी!

पति- मरते वक्त बीवी से-अलमारी से तेरा गोल्ड सेट मैंने ही चोरी किया था ! बीवी रोते हुए- कोई बात नहीं जी, पति- तेरे भाई ने तुझे 1 लाख अमानत दी थी, वो भी मैने ग़ायब की ! बीवी- मैने आपको माफ किया! पति- तेरी कमेटी के पैसे भी मैने ही चोरी किये थे! बीवी- कोई बात नहीं जी, आपको ज़हर भी मैंने ही दिया है।

कहानी | सच्चा साधु कौन है

एक साधु को एक नाविक रोज नदी के इस पार से उस पार ले जाता था, बदले मैं कुछ नहीं लेता था, वैसे भी साधु के पास पैसा कहां होता था। नाविक सरल था, पढा लिखा तो नहीं, पर समझ की कमी नहीं थी। साधु रास्ते में ज्ञान की बात कहते, कभी भगवान की सर्वव्यापकता बताते और कभी अर्थसहित श्रीमदभगवद्गीता के श्लोक सुनाते। नाविक मछुआरा बड़े ध्यान से सुनता, और बाबा की बात ह्रदय में बैठा लेता। एक दिन उस पार उतरने पर साधु नाविक को कुटिया में ले गये और बोले, वत्स, मैं पहले व्यापारी था, धन तो कमाया था, पर अपने परिवार को आपदा से नहीं बचा पाया था। अब ये धन मेरे किसी काम का नहीं, तुम ले लो, तुम्हारा जीवन संवर जायेगा, तेरे परिवार का भी भला हो जाएगा। नहीं बाबाजी, मैं ये धन नहीं ले सकता, मुफ्त का धन घर में जाते ही आचरण बिगाड़ देगा। कोई मेहनत नहीं करेगा, आलसी जीवन लोभ लालच, और पाप बढ़ायेगा। आप ही ने मुझे ईश्वर के बारे में बताया, मुझे तो आजकल लहरों में भी कई बार वो नजर आया। जब मैं उसकी नजर में ही हूं, तो फिर अविश्वास क्यों करूं, मैं अपना काम करूं, और शेष उसी पर छोड़ दूं।

शिक्षा- इस प्रसंग दोनों पात्रों में साधु कौन था? एक वो था, जिसने दुःख आया, संन्यास लिया, धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया, याद किया, और समझाने लायक स्थिति में भी आ गया, फिर भी धन की ममता नहीं छोड़ पाया, सुपात्र की तलाश करता रहा। और दूसरी तरफ वो निर्धन नाविक, सुबह खा लिया, तो शाम का पता नहीं, फिर भी पराये धन के प्रति कोई ललक नहीं। संसार में लिप्त रहकर भी निर्लिप्त रहना आ गया, सन्यास नहीं लिया, पर उस का ईश्वरीय सत्ता में विश्वास जम गया।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष व्यापार-व्यवसाय में बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी। निवेश शुभ रहेगा। भाग्य का साथ रहेगा।

वृषभ यात्रा मनोरंजक रहेगी। किसी मांगलिक कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता प्राप्त करेगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद प्राप्त होगा।

मिथुन व्यर्थ भागदौड़ रहेगी। समय का अपव्यय होगा। दूर से दुःखद समाचार प्राप्त हो सकता है। विवाद से क्लेश होगा। काम में मन नहीं लगेगा। लेन-देन में जल्दबाजी न करें।

कर्क कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शारीरिक कष्ट संभव है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। कोई ऐसा कार्य न करें जिससे कि नीचा देखना पड़े।

सिंह शत्रु शांत रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें। दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। घर में प्रतिष्ठित अतिथियों का आगमन हो सकता है। व्यय होगा।

कन्या भाग्योन्नति के प्रयास सफल रहेंगे। रोजगार प्राप्ति सहज ही होगी। व्यावसायिक यात्रा से लाभ होगा। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। निवेशादि शुभ रहेंगे।

तुला अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। पुराना रोग उभर सकता है। वाणी पर नियंत्रण रखें। किसी भी अपरिचित व्यक्ति पर अंधविश्वास न करें।

वृश्चिक प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। शुभ समाचार मिल सकता है। शारीरिक कष्ट संभव है। अज्ञात भय रहेगा। लेन-देन में सावधानी रखें। चिंता रहेगी। धनार्जन होगा।

धनु आराम का समय मिलेगा। आशंका-कुशंका रहेगी। नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। कारोबारी नए अनुबंध हो सकते हैं, प्रयास करें।

मकर यात्रा मनोनुकूल लाभ देगी। राजभय रहेगा। जल्दबाजी व विवाद करने से बचें। थकान महसूस होगी। किसी के व्यवहार से स्वाभिमान को ठेस पहुंच सकती है। शत्रु शांत रहेंगे।

कुम्भ वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शारीरिक शिथिलता रहेगी। काम में मन नहीं लगेगा। मान-सम्मान मिलेगा।

मीन कष्ट, भय व चिंता का वातावरण बन सकता है। विवेक से कार्य करें। समस्या दूर होगी। कानूनी अड़चन दूर होकर स्थिति मनोनुकूल बनेगी। आय में वृद्धि होगी।

बॉलीवुड | मन की बात

मेरी अगली फिल्म वेलकम 4 होगी : अहमद खान

अक्षय कुमार, सुनील शेट्टी और परेश रावल जैसे सितारों से सजी फिल्म वेलकम टू द जंगल 26 जून को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। बॉक्स ऑफिस पर ये कॉमेडी फिल्म अच्छा परफॉर्म कर रही है। वेलकम टू द जंगल की सक्सेज के बाद अब मेकर्स ने इसके अगले सीक्वल यानी वेलकम 4 को हरी झंडी दिखा दी है। डायरेक्टर अहमद खान ने इस सुपरहिट फ्रेंचाइजी के चौथे पार्ट को कंफर्म कर दिया है। हाल ही में एक इंटरव्यू में डायरेक्टर अहमद खान ने वेलकम 4 पर मुहर लगा दी है। अपनी आने वाली फिल्मों पर बात करते हुए उन्होंने कोईमोई से कहा, देखिए, दो-तीन चीजें हैं। सबसे पहले मैं अपने बेटे को लॉन्च करना चाहता हूं। अब समय आ गया है कि मैं 25 साल के आजान को लॉन्च करूं। इसके बाद उन्होंने बड़ा खुलासा करते हुए कहा, मेरी अगली फिल्म वेलकम होगी। यानी इसका अगला पार्ट। अहमद खान ने ये भी बताया कि वेलकम 4 के अलावा उनके पास कई बड़े प्रोजेक्ट्स पाइपलाइन में हैं। उन्होंने कहा, फिरोज नाडियाडवाला के साथ एक फिल्म है और साजिद नाडियाडवाला के साथ भी एक प्रोजेक्ट पाइपलाइन में है। फिलहाल मैं कई फिल्मों पर विचार कर रहा हूं। बता दें कि वेलकम 4 पर मुहर ऐसे समय लगी है, जब वेलकम टू द जंगल बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन कर रही है। बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के अनुसार, इस फिल्म ने अब तक दुनियाभर में 180.06 करोड़ रुपये कमा लिए हैं। फिल्म में तुषार कपूर, श्रेयस तलपड़े, जैकी श्रॉफ, रवीना टंडन, लारा दत्ता, जैकलीन फर्नांडिस, दिशा पटानी, जॉनी लीवर और राजपाल यादव जैसे एक्टर्स नजर आ रहे हैं।

दीपिका पादुकोण को 'ड्रीम गर्ल' बनते देखना चाहती हैं हेमा मालिनी

हेमा मालिनी को हिंदी सिनेमा में 6 दशक से ज्यादा का समय हो चुका है। अपने 60 सालों के लंबे करियर में हिंदी के साथ-साथ कई दक्षिण भारतीय फिल्मों में भी अपने अभिनय का जादू चलाया। हेमा मालिनी को हिंदी सिनेमा की ड्रीम गर्ल भी कहा जाता है और एक समय था जब हर बड़ा एक्टर-डायरेक्टर उनके साथ काम करना चाहता था। आज भी हेमा मालिनी की लोकप्रियता काफी ज्यादा है। हाल ही में हेमा मालिनी ने मुंबई में आयोजित ड्रीम गर्ल्स डायमंड जुबली कार्यक्रम में फिल्म इंडस्ट्री में अपने 60 साल पूरे होने का जश्न मनाया। इस दौरान उन्होंने उस अभिनेत्री का नाम भी बताया, जिसे वह बड़े पर्दे पर अपनी भूमिका निभाते देखना चाहती हैं।

कार्यक्रम के दौरान जब हेमा मालिनी से पूछा गया कि अगर उनकी बायोपिक बनती है तो क्या वह अपनी बायोपिक में दीपिका को अपने रोल में देखना पसंद करेंगी? तो जवाब में उन्होंने साफ कर दिया कि अगर उन पर बायोपिक बनती है तो वह इसमें दीपिका पादुकोण को देखना चाहेंगी। हेमा मालिनी ने सवाल का जवाब देते हुए कहा, अगर वह चाहें, तो वह यह कर सकती हैं। कोई भी यह कर सकता है। इसके बाद उन्होंने दीपिका की तारीफ करते हुए कहा- दीपिका एक खूबसूरत और टैलेंटेड लड़की हैं।

बता दें, हेमा मालिनी और दीपिका पादुकोण के बीच हमेशा से अच्छे संबंध हैं। 2017 में जब हेमा मालिनी की राम कमल मुखर्जी द्वारा लिखित बायोग्राफी हेमा मालिनी: बियॉन्ड द ड्रीम गर्ल लॉन्च की गई, तब भी इसके लिए दीपिका पादुकोण को ही चुना गया था। यही नहीं, ये भी माना जाता है कि दीपिका ने शाहरुख खान स्टारर ओम शांति ओम में जो दो रोल निभाए थे, उनमें से एक हेमा मालिनी से ही प्रेरित था। उनके किरदार शांतिप्रिया को भी ड्रीम गर्ल कहा गया था, ये टाइटल 70-80 के दशक में हेमा मालिनी से जुड़ा था और आज भी ड्रीम गर्ल का जिक्र होते ही लोगों की नजरों में हेमा मालिनी का ही चेहरा आता है।

ओपनिंग वीकेंड पर कमाई में बादशाह निकली धमाल 4

बॉलीवुड | मसाला

मौजूदा समय में अगर कोई फिल्म सिनेमाघरों से लेकर बॉक्स ऑफिस तक अपनी धाक जमाए हुए तो उसका नाम धमाल 4 है। अभिनेता अजय देवगन की इस मल्टी स्टारर कॉमेडी फिल्म ने सही मायनों में जनता का दिल जीत लिया है और इस वजह से बंपर कमाई करती हुई नजर आ रही है। इस बीच ओपनिंग वीकेंड में बॉक्स ऑफिस कलेक्शन के मामले में धमाल 4 ने इस साल आई अक्षय कुमार की दो बड़ी कॉमेडी फिल्में भूत बंगला और वेलकम टू द जंगल को धूल चटा दी है।

बीते शुक्रवार को निर्देशक इंद्र कुमार की कल्ट कॉमेडी फिल्म फ्रेंचाइजी धमाल 4 को बड़े पर्दे पर रिलीज किया गया। इस मूवी में अजय देवगन के साथ-साथ अरशद वारसी, जावेद जाफरी, रितेश देशमुख, संजय मिश्रा, संजीदा शेख, अंजलि आनंद और रवि किशन जैसे कई कलाकार अहम भूमिका में मौजूद हैं। मजेदार कहानी के दम पर धमाल 4 को क्रिटिक्स और ऑडियंस की तरफ से पॉजिटिव रिस्पॉन्स मिला है और इसी वजह से कमाई के मामले में भी ये कॉमेडी मूवी अव्वल निकली है। इस बीच ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श ने इस बात की जानकारी दी है कि धमाल 4 ने ओपनिंग वीकेंड पर कलेक्शन के मामले में भूत बंगला और वेलकम टू द जंगल को पीछे छोड़ दिया है।

तरण के अनुसार धमाल 4 ने रिलीज पहले वीकेंड पर घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 67.21 करोड़ का धमाकेदार कारोबार किया है, जबकि एक्सटेंड वीकेंड होने के बावजूद भूत बंगला 65.25 और वेलकम टू द जंगल 65.83 करोड़ का कलेक्शन ही कर पाई। इस लिहाज से धमाल 4 ने कॉमेडी फिल्म के तौर पर बाजी मारी ली है। जिस रफ्तार के साथ फिलहाल धमाल 4 बॉक्स ऑफिस पर कमाई कर रही है, उसको मद्देनजर रखते हुए साफ कहा जा सकता है कि आने वाले वीकेंड तक ये मूवी 100 करोड़ के क्लब में बड़ी आसानी से एंट्री ले लेगी। ऐसा करते ही धमाल 4 इस साल 2026 की सफलतम मूवीज में भी शुमार हो जाएगी।

अजब-गजब | ये है दुनिया का अनोखा गांव

इस गांव में इंसानों से ज्यादा रहते हैं पुतले वजह कर देगी भावुक, छिपी है अनोखी कहानी!

क्या आपने कभी ऐसे गांव के बारे में सुना है, जहां इंसानों से ज्यादा पुतले रहते हों? सुनने में यह अजीब जरूर लगता है, लेकिन जापान के शिकोकू द्वीप पर स्थित नागोरो गांव सचमुच ऐसा ही है। यहां सड़क किनारे बैठे बुजुर्ग, खेतों में काम करते किसान और स्कूल में पढ़ते बच्चे दिखाई देते हैं, लेकिन जब आप उनके पास जाते हैं तो पता चलता है कि वे इंसान नहीं, बल्कि पुतले हैं। यही वजह है कि इस गांव को दुनिया भर में 'स्केयरक्रो विलेज' यानी पुतलों वाला गांव कहा जाता है।

एक समय था जब नागोरो गांव भी दूसरे गांवों की तरह लोगों की चहल-पहल से भरा रहता था। यहां परिवार रहते थे, बच्चे स्कूल जाते थे और खेतों में खेती होती थी। लेकिन समय के साथ बेहतर पढ़ाई और रोजगार की तलाश में युवा बड़े शहरों की ओर चले गए। धीरे-धीरे गांव खाली होता गया। आज यहां सिर्फ 25 से 30 लोग ही रहते हैं, जबकि पूरे गांव में 350 से ज्यादा पुतले मौजूद हैं।

इस अनोखी सोच की शुरुआत गांव की रहने वाली अयानो सुकिमी ने की है। कई साल बाद जब वह अपने गांव लौटीं, तो उन्हें बचपन का चहल-पहल वाला गांव पूरी तरह बदल

चुका मिला। खाली घर और सुनसान गलियां देखकर उनका मन उदास हो गया। तब उन्होंने सबसे पहले अपने पिता की तरह दिखने वाला एक पुतला बनाया और उसे खेत में रख दिया। दूर से देखने पर लोगों को लगा कि कोई किसान काम कर रहा है। यहीं से उन्हें एक नया विचार मिला।

इसके बाद अयानो ने गांव छोड़ चुके या दुनिया से जा चुके लोगों की याद में उनके जैसे दिखने वाले पुतले बनाना शुरू कर दिए। उन्होंने खेतों में किसानों के पुतले लगाए, दुकानों में दुकानदार, बस स्टॉप पर इंतजार करते लोग और स्कूल में बच्चों व शिक्षकों के पुतले बैठा दिए। इन पुतलों को इतने वास्तविक तरीके से बनाया गया है कि पहली नजर में कोई भी धोखा खा सकता है। कपड़े, चेहरे के भाव और बैठने का अंदाज बिल्कुल असली इंसानों जैसा लगता है। नागोरो का पुराना स्कूल भी आज पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। कक्षा में बच्चे बैठे दिखाई देते हैं और सामने शिक्षक खड़ा नजर आता है, लेकिन पूरा कमरा पुतलों से भरा हुआ है। गांव के कई हिस्सों में भी ऐसे ही दृश्य देखने को मिलते हैं, जो बीते समय की याद दिलाते हैं।

यह गांव देखने में भले ही थोड़ा अलग लगे, लेकिन यहां आने वाले लोग कहते हैं कि यह जगह डराती नहीं, बल्कि भावुक कर देती है। हर पुतला किसी ऐसे व्यक्ति की याद दिलाता है, जो कभी इस गांव का हिस्सा था। यही कारण है कि नागोरो सिर्फ एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि बदलते समय और खाली होते गांवों की कहानी भी बन चुका है।

आज दुनिया भर से लोग इस गांव को देखने आते हैं। नागोरो यह संदेश देता है कि किसी भी जगह की असली पहचान वहां रहने वाले लोग होते हैं। लोग भले ही समय के साथ दूर चले जाएं, लेकिन उनकी यादें हमेशा जिंदा रहती हैं। शायद यही वजह है कि यह छोटा-सा गांव आज पूरी दुनिया में अपनी अनोखी और भावुक कहानी के लिए जाना जाता है।

भारत के इस गांव में 6 पीढ़ियों से एक ही चूल्हे में बनता है 83 सदस्यों का खाना, प्यार से रहता है पूरा परिवार

आज के दौर में जहां संयुक्त परिवार धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं और ज्यादातर लोग छोटे परिवारों में रहना पसंद कर रहे हैं, वहीं आंध्र प्रदेश का एक परिवार अपनी अनोखी जीवनशैली के कारण चर्चा में है। अनंतपुर जिले के कुरलपल्ली गांव में रहने वाला नागप्पा परिवार इस बात का उदाहरण है कि आपसी समझ, सहयोग और विश्वास के दम पर बड़ा परिवार भी खुशी-खुशी एक साथ रह सकता है। इस परिवार में कुल 83 सदस्य हैं, जो छह पीढ़ियों से एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। हालांकि सभी लोग चार अलग-अलग मकानों में रहते हैं, लेकिन उनका रहन-सहन और पारिवारिक व्यवस्था आज भी एक संयुक्त परिवार की तरह ही है। घर के बड़े-बुजुर्ग पूरे परिवार का मार्गदर्शन करते हैं और हर सदस्य अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाता है। परिवार में दादा-दादी, माता-पिता, बहुएं, बच्चे और बुजुर्ग सभी मिलकर घर और कारोबार की जिम्मेदारियां संभालते हैं। इस परिवार की सबसे खास बात इसकी रोजाना की दिनचर्या है। हर सुबह सभी बड़े सदस्य एक साथ बैठकर चाय या कॉफी के साथ पूरे दिन की योजना बनाते हैं। इसी दौरान तय किया जाता है कि कौन खेती का काम देखेगा, कौन घर की जिम्मेदारी संभालेगा और दिनभर के जरूरी काम कैसे पूरे किए जाएंगे। इस व्यवस्थित तरीके से काम बांटने की वजह से किसी एक व्यक्ति पर ज्यादा बोझ नहीं पड़ता और सभी मिलकर जिम्मेदारियां निभाते हैं। आधुनिक समय में जहां हर घर की अलग रसोई होती है, वहीं इस परिवार में चार मकानों के बावजूद पूरे परिवार का भोजन एक ही रसोई में तैयार किया जाता है। राशन से लेकर सब्जियों की व्यवस्था सामूहिक रूप से होती है, जबकि परिवार की महिलाएं मिलकर सभी सदस्यों के लिए खाना बनाती हैं। साथ बैठकर भोजन करना यहां की सालों पुरानी परंपरा है, जिसे परिवार आज भी पूरी श्रद्धा से निभा रहा है। परिवार की आय का स्रोत केवल खेती नहीं है। कृषि के साथ-साथ यह परिवार परिवहन का व्यवसाय भी करता है। परिवार के पास कई बसें हैं, जो आसपास के क्षेत्रों में संचालित होती हैं। सबसे खास बात यह है कि परिवार की पूरी कमाई एक शेयर व्यवस्था में रखी जाती है और जरूरत के अनुसार खर्च की जाती है। यहां व्यक्तिगत कमाई से ज्यादा सामूहिक भलाई को महत्व दिया जाता है। इतने बड़े परिवार में मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन परिवार का एक नियम है कि किसी भी विवाद को अगले दिन तक नहीं ले जाया जाएगा। अगर किसी बात पर असहमति होती है, तो उसी दिन बातचीत के जरिए उसका समाधान निकाल लिया जाता है। परिवार के बुजुर्ग मानते हैं कि सम्मान, धैर्य और खुला संवाद ही रिश्तों को मजबूत बनाए रखता है।

राम मंदिर चढ़ावा मामले पर बढ़ रही रार

» छत्तीसगढ़ की विस में उठा मामला

» वोटों व जनता से मिले दान की चोरी करती है बीजेपी व आरएसएस : बघेल

कांग्रेस ने पूरे देश में जोरशोर से उठाया मुद्दा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। वोट चोरी के मामले अब यूपी से निकल अन्य राज्यों में उठने लगे हैं। यही नहीं अब तो विधानसभा में विपक्ष द्वारा जोर शोर उठाए जा रहे है। छत्तीतस गढ़ में ये मामला उभ जिस पर कांग्रेस ने भाजपा को घेरा। कांग्रेस नेता भूपेश बघेल ने आरोप लगाया कि बीजेपी और आरएसएस एक तरफ़ वोटों की चोरी कर रहे हैं और दूसरी तरफ़ जनता से मिले दान की चोरी कर रहे हैं। उनके ये बयान राम मंदिर के लिए मिले दान की चोरी के आरोपों के बीच आए हैं। उन्होंने यहां पत्रकारों से कहा, हमारे नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत ने अयोध्या राम तीर्थ क्षेत्र के लिए मिले दान और चढ़ावे की चोरी के मामले में स्थगन प्रस्ताव पेश किया था। आपको रामशिला पूजा कार्यक्रम याद होंगे बीजेपी और आरएसएस के सदस्यों ने देश भर के गाँवों का दौरा किया और करोड़ों रुपये इकट्ठा किए।

आज तक उस पैसे का कोई हिसाब-किताब नहीं दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद जब राम मंदिर का निर्माण शुरू हुआ, तो लोगों ने फिर से दान दिया। छत्तीसगढ़ के लाखों लोगों ने करोड़ों रुपये का दान दिया, हालांकि, निर्माण कार्य को लेकर शिकायतें सामने आई हैं, खासकर यह आरोप कि 4० प्रतिशत कमीशन लिया गया। कांग्रेस नेता ने कहा कि उन्होंने भी राम मंदिर के निर्माण में योगदान दिया था। सदन में मुझसे पूछा गया कि क्या मैंने, यानी भूपेश बघेल ने भी दान दिया है। मैंने जवाब दिया, हां, मैंने दिया था और वह रकम 1,2 1०० रुपये थी। मेरी तरह ही लाखों लोगों ने निर्माण में योगदान दिया। इसीलिए हम सदन में इस पर चर्चा की मांग कर रहे हैं। बीजेपी, आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद भगवान राम को भी नहीं बख्श रहे हैं; वे एक तरफ़ वोटों की चोरी कर रहे हैं तो दूसरी तरफ़ धार्मिक चढ़ावे की चोरी। भारतीय जनता पार्टी और उसके लोग ऐसा कर रहे हैं।

मैंने भी दान दिया इसलिए सदन में चर्चा हो : पूर्व सीएम

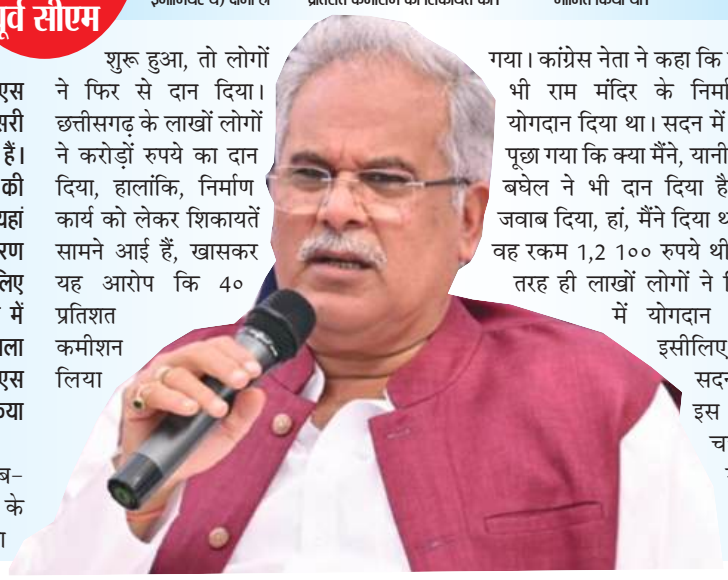

अकाउंटेंट को नजरअंदाज कर उसे ही हटा दिया गया

अकाउंटेंट महिपाल सिंह की शिकायत पर कार्रवाई करने के बजाय, चंपत राय जी ने उन्हें हटा दिया। कांग्रेस नेता ने आगे दावा किया कि महिपाल सिंह और दीनानाथ वर्मा (जो पहले श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र से जुड़े एक रिटायर्ड इंजीनियर थे) दोनों ही आरएसएस कार्यकर्ता थे जिन्हें चंपत राय ने नियुक्त किया था। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मंदिर प्रोजेक्ट से जुड़े रिटायर्ड चीफ इंजीनियर वर्मा को तब हटा दिया गया, जब उन्होंने कॉन्ट्रैक्टर्स द्वारा 40 प्रतिशत कमीशन की कथित मांग के बारे में शिकायत की थी। सिंह ने कहा कि एक ईमानदार इंजीनियर ने चंपत राय जी से 40 प्रतिशत कमीशन की शिकायत की। अगले ही दिन उनसे कहा गया कि अब आप जा सकते हैं, आपका काम हो गया है। प्रधानमंत्री को जिम्मेदार ठहराते हुए सिंह ने आरोप लगाया कि ट्रस्ट का गठन उन्हीं की देखरेख में हुआ था। उन्होंने आरोप लगाया, पीएम मोदी चंपत राय जैसे व्यक्ति को बचा रहे हैं। जवाबदेही और जिम्मेदारी उन्हीं की है। ट्रस्ट के सदस्यों को उन्होंने ही नामित किया था।

चंपत राय को क्यों बचा रहे पीएम : दिग्विजय सिंह

कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने राम मंदिर चंदे में कथित हेराफेरी के मामले को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय को बचा रहे हैं और कहा कि ट्रस्ट के कामकाज के लिए जवाबदेही उन्हीं की है। सिंह ने अयोध्या मंदिर में दान की कथित चोरी को लोगों की आस्था पर एक चोट बताया। दिग्विजय सिंह ने कहा कि लेकिन आज सबसे अहम मुद्दा हमारी गहरी आस्था पर लगी चोट है, जो अयोध्या में राम मंदिर से जुड़ी है, जो हमारे पूज्य देवता भगवान राम की जन्मभूमि है। यह एक ऐसा मकसद है जिसके लिए निर्मोही अखाड़े ने 150 से ज़्यादा सालों तक और गोरखनाथ ट्रस्ट के महंतों ने कम से कम एक सदी तक लड़ाई लड़ी है। अब, राम लला की वह मूर्ति कहां है, वही देवता जिन्होंने मंदिर को उसकी पहचान दी थी? सिंह ने आरोप लगाया कि अब ऐसे चढ़ावे से दान की रकम चोरी हो रही है। 40 दिनों में 71 बार चोरी हुई है। सीसीटीवी फुटेज भी गायब हो गया है।

पूर्व चुनाव आयुक्त के बयान से बढ़ी हलचल

» कुरैशी बोले- चुनाव आयोग पर मंत्रियों के बोल से आहत थे पूर्व पीएम मनमोहन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एसवाई कुरैशी के बयान पर सरगर्मी बढ़ गई है। उन्होंने कहा है कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह चुनाव आयोग का बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने याद करते हुए बताया कि जब उन्हें दूसरी यूपीएम सरकार के दौरान उनके मंत्रियों की बेतुकी बातों के बारे में चुनाव आयोग की राय बताई गई, तो उन्होंने कहा कि अगर आप ऐसा सोचते हैं, तो मैं आत्महत्या कर लूंगा। एएनआई को दिए एक इंटरव्यू में कुरैशी जिन्होंने 2०1० से 2०12 तक सीईसी के तौर पर काम किया ने कहा कि मनमोहन सिंह की ये बातें सुनकर उन्हें बहुत हैरानी हुई और वे इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे।

कुरैशी ने बताया कि उस समय के प्रधानमंत्री को शांत करने में उन्हें 15-2० मिनट लग गए। उन्होंने यह भी कहा कि चुनाव आयोग पर कोई भी आरोप मनमोहन सिंह को मंजूर नहीं था। यह घटना उत्तर प्रदेश में 12 के विधानसभा चुनावों के समय की है, जब चुनाव आयोग ने तत्कालीन केंद्रीय कानून और अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री सलमान खुर्शीद को उनकी टिप्पणियों के लिए फटकार लगाई थी। उन्होंने कहा जब हम यूपी में चुनाव करवा रहे थे, उस समय कानून मंत्री सलमान खुर्शीद ने घोषणा की थी कि अगर वे सत्ता में आए तो अल्पसंख्यकों के लिए कोटा बढ़ा देंगे। तुरंत ही बीजेपी ने (चुनाव आयोग से) शिकायत की। हम ऐसी सभी शिकायतों को बहुत गंभीरता से लेते थे। हमने तुरंत दूसरी पार्टी को नोटिस भेजा और दोनों पक्षों के वकीलों की टीम पेश हुई। चार दिन की सुनवाई के बाद, हम इस नतीजे पर पहुँचे कि खुर्शीद ने वास्तव में आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किया था। इसलिए हमने अधिकतम सज़ा सुनाई... उसके बाद, कांग्रेस के कुछ मंत्रियों और नेताओं ने चुनाव आयोग और मेरे ख़िलाफ़ व्यक्तिगत रूप से अनर्गल बातें करना शुरू कर दिया। हम बहुत परेशान थे। मुझे लोगों की आलोचना से कोई फ़र्क नहीं पड़ता, लेकिन चुनाव आयोग की निंदा करना मंजूर नहीं था।

कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार को राहत

» सात साल पुराना आचार संहिता मामले में बेगूसराय कोर्ट से मिली जमानत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। कांग्रेस के फायरब्रांड नेता कन्हैया कुमार को सोमवार को बिहार के बेगूसराय की एक विशेष अदालत से बड़ी राहत मिली है। कन्हैया को साल 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान दर्ज हुए आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन से जुड़े एक मामले में जमानत दे दी गई है। कोर्ट से राहत मिलने के बाद कन्हैया कुमार ने अपने ऊपर लगे आरोपों को पूरी तरह बेबुनियाद और राजनीतिक रूप से प्रेरित बताया। उन्होंने कहा, 2019 के चुनावों के समय का एक मामला है जिसमें किसी ने सरकारी इमारत पर मेरा पोस्टर चिपका दिया था। प्रशासन ने इसके सिलसिले में आचार सहिंता उल्लंघन का मामला दर्ज किया।

मुझ पर लगाया गया आरोप बेबुनियाद है, मैं खुद पोस्टर लगाने नहीं गया था। कन्हैया कुमार को 1०-1० हज़ार रुपये के दो ज़मानत बॉन्ड भरने पर रिहा किया गया। कुमार के अदालत में सरेंडर करने के बाद, स्पेशल जज विवेक चंद्र वर्मा ने उन्हें 1०-1० हज़ार रुपये के दो ज़मानत बॉन्ड भरने पर रिहा कर दिया। यह मामला कुमार के खिलाफ 2०19 के लोकसभा चुनावों के दौरान दर्ज किया गया था, जब उन्होंने कांग्रेस के टिकट पर बेगूसराय सीट से चुनाव लड़ा था। कुमार ने पत्रकारों से कहा, विपक्ष पर हमेशा आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप लगाया जाता है। हालांकि, सत्ता में बैठे लोग नियमित रूप से इसका उल्लंघन करते हैं और संविधान के खिलाफ आक्रामक तरीके से काम करते हैं। उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाती है। मुझे उम्मीद है कि मुझे अदालत से न्याय मिलेगा। चुनावों के दौरान कुमार के खिलाफ बछवाड़ा पुलिस स्टेशन में एक एफआईआर दर्ज की गई थी। यह मामला रुदौली गांव में एक घर पर मालिक की इजाज़त के बिना पोस्टर चिपकाने से जुड़ा था।

कांग्रेस नेता ने भाजपा को जमकर घेरा

» राजस्थान में अभी चुनाव हो तो सत्ता परिवर्तन हो जाए : पायलट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बांसवाड़ा। राजस्थान के पूर्व उप मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सचिन पायलट ने बांसवाड़ा दौरे के दौरान राज्य की भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए दावा किया कि यदि आज राजस्थान में विधानसभा चुनाव हो जाएं तो सत्ता परिवर्तन तय है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता वर्तमान सरकार से निराश और परेशान है तथा कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत देने का मन बना चुकी है।

सचिन पायलट कुशलगढ़ में विधायक रमिला खड़िया के पति स्व. हुरतेंग खड़िया की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे थे। उन्होंने केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा कि जिस डबल इंजन सरकार का दावा किया गया था, वह विकास के मोर्चे पर पूरी तरह विफल साबित हुई है। डबल इंजन अब केवल धुआं छोड़ रहा है, लेकिन जनता को विकास का लाभ नहीं मिल रहा। पायलट ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार की नीतियां गरीब, आदिवासी और दलित विरोधी हैं। सरकार जनता के संसाधनों का उपयोग आम लोगों के बजाय कुछ चुनिंदा निजी और आर्थिक रूप से मजबूत वर्गों के हितों के लिए कर रही है। प्रदेश के आदिवासी और दलित समाज के साथ भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया जा रहा है।

राज्य में नहीं मिल रहा हक

उन्होंने अयोध्या के राम मंदिर ट्रस्ट से जुड़े कथित चंदा अनियमितता के मुद्दे का भी उल्लेख करते हुए सरकार की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए। साथ ही महिलाओं को मिलने वाली आर्थिक सहायता योजनाओं को लेकर भी राज्य सरकार को घेरा। पायलट ने कहा कि यदि देश के अन्य राज्यों में महिलाओं को सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ मिल सकता है तो राजस्थान की महिलाओं को इससे वंचित क्यों रखा जा रहा है। उन्होंने सरकार की मंशा पर सवाल उठाते हुए कहा कि महिलाओं को उनका अधिकार मिलना चाहिए।

भारत ने लॉर्ड्स टेस्ट में रचा इतिहास

» इंग्लैंड की महिला टीम को 270 रन से हराकर दर्ज की यादगार जीत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लंदन। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने क्रिकेट के होम ऑफ क्रिकेट लॉर्ड्स में इतिहास रचते हुए इंग्लैंड को 270 रन से हराकर पहला महिला टेस्ट अपने नाम कर लिया। यह लॉर्ड्स के 142 साल के टेस्ट इतिहास में पहला मौका था, जब इस प्रतिष्ठित मैदान पर महिला टेस्ट मैच खेला गया और भारत ने इस ऐतिहासिक मुकाबले को शानदार अंदाज में जीतकर यादगार बना दिया। भारत ने चौथे दिन सुबह इंग्लैंड की दूसरी पारी 186 रन पर समेटते हुए मुकाबला अपने नाम किया। इंग्लैंड को जीत के लिए 457 रन का विशाल लक्ष्य मिला था, लेकिन मेजबान टीम भारतीय गेंदबाजों के सामने टिक नहीं सकी।

भारत को अंतिम दिन जीत के लिए केवल चार विकेट की जरूरत थी, जिसे उसने पहले ही सत्र में हासिल कर लिया। भारत ने पहली पारी में 285 रन बनाए। जवाब में इंग्लैंड की पहली पारी केवल 170 रन पर सिमट गई, जिससे भारत को 115 रन की महत्वपूर्ण बढ़त मिली। इसके बाद भारतीय टीम ने दूसरी पारी 147/7 के स्कोर पर घोषित कर इंग्लैंड के सामने 457 रन का लक्ष्य रखा। तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक इंग्लैंड का स्कोर 130/6 था और चौथे दिन भारतीय गेंदबाजों ने जल्द ही बाकी चार विकेट भी हासिल कर लिए। भारत की जीत में तेज गेंदबाज क्रांति गौड़ ने अहम भूमिका निभाई। उन्होंने पहली पारी में पांच विकेट लेकर लॉर्ड्स के ऑनर्स बोर्ड में अपना नाम दर्ज कराया। दूसरी पारी में स्नेह राणा और दीप्ति शर्मा ने शानदार गेंदबाजी करते हुए इंग्लैंड की वापसी की सभी उम्मीदें खत्म कर दीं। इंग्लैंड की ओर से सोफी एक्लेस्टोन ने संघर्षपूर्ण अर्धशतक लगाया, जबकि एमी जोन्स ने भी 54 रन बनाए, लेकिन दोनों की पारियां टीम को हार से नहीं बचा सकीं।

सचिन तेंदुलकर ने बढ़ाया टीम का उत्साह

ऐतिहासिक जीत से पहले चौथे दिन सुबह भारतीय टीम को एक खास सरप्राइज मिला। महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर बिना किसी पूर्व सूचना के भारतीय ड्रेसिंग रूम पहुंचे और कप्तान हरमनप्रीत कौर सहित पूरी टीम और सपोर्ट स्टाफ से मुलाकात कर उनका हौसला बढ़ाया। इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज निक नाइट ने प्रसारण के दौरान कहा कि भारतीय खिलाड़ियों के लिए इससे बड़ा प्रेरणादायक क्षण शायद ही कोई हो सकता था। उन्होंने कहा कि सचिन का इस तरह अचानक टीम के बीच पहुंचना खिलाड़ियों के आत्मविश्वास को और मजबूत करने वाला पल था। मैच समाप्त होने के बाद सचिन तेंदुलकर ने खिलाड़ियों से मुलाकात की और उन्हें ऐतिहासिक जीत की बधाई दी। आईसीसी चेयरमैन जय शाह भी लॉर्ड्स में मौजूद रहे और उन्होंने भी भारतीय टीम की इस उपलब्धि का साक्षी बने।

मानसून सत्र में विपक्ष की सरकार को घेरने की तैयारी

राम मंदिर चोरी मामला, पेपर लीक जैसे मुद्दों पर जोरदार बहस की उम्मीद

» 20 जुलाई से 13 अगस्त तक चलेगा सदन

» कांग्रेस की बैठक 16 को सोनिया गांधी के आवास पर बनेगी रणनीति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। 20 जुलाई से शुरू हो रहे मानसून सत्र के लिए विपक्ष ने कम कस ली है। कांग्रेस संसदीय रणनीति समूह 16 जुलाई को सोनिया गांधी के आवास पर बैठक करेगा, ताकि आगामी मानसून सत्र के लिए पार्टी की रणनीति को अंतिम रूप दिया जा सके। ऐसा माना जा रहा विपक्ष इसबार एनडीए सरकार राममंदिर चोरी, पेपरलीक व एसआईआर जैसे मुद्दों पर घेरने की तैयारी कर रहा है।

सदन में ज़ोरदार बहस की उम्मीद है। सुबह 11 बजे होने वाली इस बैठक में पार्टी द्वारा उठाए जाने वाले मुद्दों और सत्र के लिए उसकी समग्र संसदीय रणनीति पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। सरकार ने संसद का सत्र शुरू होने से एक दिन पहले, यानी 19 जुलाई को सर्वदलीय बैठक बुलाई है। इस बैठक का मकसद विधायी एजेंडे पर चर्चा करना और अलग-अलग राजनीतिक दलों से समर्थन हासिल करना है। अधिकारियों के मुताबिक, संसद के हर सत्र से पहले होने वाली यह पारंपरिक बैठक भी सुबह 11 बजे शुरू होगी।

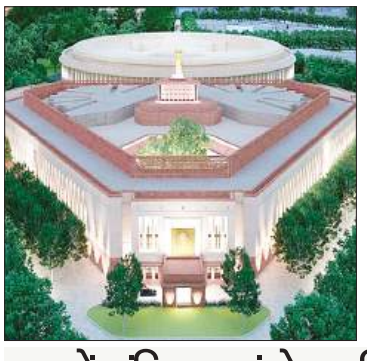

मानसून सत्र, जिसके बारे में केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू पहले ही बता चुके हैं कि यह 20 जुलाई से 13 अगस्त तक चलेगा, में ज़ोरदार बहस होने की उम्मीद है। उम्मीद है कि विपक्ष कई राजनीतिक और जनहित से जुड़े मुद्दों को उठाएगा, जबकि सरकार अपनी विधायी योजनाओं को आगे बढ़ाने पर ध्यान देगी।

राष्ट्रपति ने मॉनसून सत्र-26 के लिए संसद के दोनों सदनों को बुलाने की दी मंजूरी

रिजिजू ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि भारत सरकार की सिफारिश पर, राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने मॉनसून सत्र 26 के लिए संसद के दोनों सदनों को बुलाने की मंजूरी दे दी है। यह सत्र 20 जुलाई 26 से शुरू होगा और 13 अगस्त 26 तक चलेगा, जिसमें राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर सार्थक बहस, चर्चा और फैसले लिए जाएंगे।

130वें संविधान संशोधन बिल को किया जाएगा पास

इस सत्र में महत्वपूर्ण विधायी प्रस्तावों पर विस्तृत चर्चा होने की संभावना है, क्योंकि सरकार विचार-विमर्श के लिए अहम बिल पेश करने की तैयारी कर रही है। हाल ही में कुछ विपक्षी दलों के बीच मतभेदों को देखते हुए, इस दौरान तीखी बहस या टकराव की स्थिति बनने की उम्मीद है। इसके अलावा, प्रस्तावित 130वें संविधान संशोधन बिल की जांच कर रही संयुक्त संसदीय समिति के 17 जुलाई को अपनी रिपोर्ट को मंजूरी देने और फिर उसे संसद में पेश करने की उम्मीद है। इस बिल को लेकर राजनीतिक बहस छिड़ गई है, क्योंकि इसमें एक ऐसा प्रावधान है जिसके तहत गंभीर अपराधों के मामलों में लगातार 30 दिनों तक न्यायिक हिरासत में रहने पर प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों और केंद्रीय या राज्य मंत्रियों को उनके पद से अपने-आप हटा दिया जाएगा।

जून में खुदरा महंगाई दर बढ़ने से आमजन परेशान : जयराम

» कांग्रेस नेता ने केंद्र सरकार की आलोचना की

» बोले- पूंजीपतियों का संरक्षक बनी सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने केंद्र सरकार की आलोचना की। उन्होंने महंगाई को लेकर सरकार पर प्रहार किया। कांग्रेस नेता बोले जून में खुदरा महंगाई दर मई के 3.93 प्रतिशत से बढ़कर 4.38 प्रतिशत हो गई, जो भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) के 4 प्रतिशत के लक्ष्य से अधिक है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पूंजीपतियों का संरक्षक बताया और सरकार पर आरोप लगाया कि वह यह सुनिश्चित करती है कि मुनाफ़ा पूंजीपतियों को मिले, जबकि आम लोग महंगाई की मार झेलें।

उन्होंने एक्स पर लिखा कि मोदी सरकार के 12 सालों का असली सार यही है, झूठे वादों की बौछार और जनता पर महंगाई व बेरोजगारी की क्रूर मार! मोदी सरकार के 12 सालों में महंगाई ने आम परिवारों का बजट बिगाड़ दिया है। रमेश ने एक मीडिया रिपोर्ट का हवाला देते हुए बैंक की ब्याज दरों में संभावित बढ़ोतरी को लेकर चिंता जताई, जिससे घर और कार के लिए ज़्यादा EMI के कारण मध्यम वर्ग पर बोझ बढ़ सकता है। उन्होंने सवाल किया कि मुनाफा तो पूंजीपतियों की जेब में जाता है, जबकि बोझ आम लोगों पर क्यों पड़ता है? पूंजीपतियों के संरक्षक प्रधानमंत्री मोदी आम लोगों की तकलीफ़ों के बारे में कब बोलेंगे?

चौकीदार ही चोर निकले : दानिश

कांग्रेस नेता दानिश अली ने राम मंदिर के लिए मिले चंदे में कथित हेराफेरी की जल्द जांच की निगरानी सुप्रीम कोर्ट से कराने की मांग की है।

उन्होंने मामले को दबाए जाने की आशंका जताई है और मौजूदा जांच की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठाए हैं। अली ने कहा कि देखिए, यह साबित हो चुका है कि जो लोग रखवाले थे, वही चोर निकले। चढ़ावे की चोरी इतनी गंभीर घटना है कि इसकी सज़ा सिर्फ़ सुप्रीम कोर्ट ही तय कर सकता है। अली ने कहा कि चोरी की घटना पर कोई विवाद नहीं है, जहां तकजांच की बात है, एक बात तो तय है। कोई भी इस बात से इनकार नहीं कर रहा है कि चढ़ावे की चोरी हुई है। यहां तक कि बीजेपी, आरएसएस और ट्रस्ट भी इसे मानते हैं। अब बड़ा सवाल यह है कि जांच कौन करेगा? अली ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बनाई गई स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम की निष्पक्षता पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि क्या वे लोग जांच करेंगे जो पहरेदार थे और जिनकी निगरानी में चोरी हुई? और क्या वह तथाकथित एसआईटी अपनी रिपोर्ट उन्हीं को सौंपेगी? ऐसा नहीं होने दिया जा सकता।

ई-20 इथेनॉल की समीक्षा करे सरकार : अरविंद केजरीवाल

» आप संयोजक ने प्रधानमंत्री मोदी को लिखा पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर उन गाड़ियों के लिए ई-20 पेट्रोल के इस्तेमाल पर फिर से विचार करने का अनुरोध किया है, जो इथेनॉल-मिश्रित ईंधन पर चलने के लिए नहीं बनी हैं।

केजरीवाल ने अपने पत्र में कहा कि पुरानी गाड़ियों में ई-20 पेट्रोल के इस्तेमाल से माइलेज कम हुआ है, इंजन जल्दी खराब हो रहा है और 23 से पहले बनी कारों और दोपहिया वाहनों के मालिकों पर ज़्यादा आर्थिक बोझ पड़ा है। आप नेता ने पेट्रोल पंपों से कहा कि वे ग्राहकों को शुद्ध पेट्रोल और ई-20 -ब्लेंडेड फ्यूल में से चुनने का विकल्प दें। उन्होंने ई-20 पेट्रोल की कीमत कम करने की भी मांग की और तर्क दिया कि इस फ्यूल की कैलोरीफ़िक वैल्यू कम होने के कारण माइलेज कम मिलता है। मंगलवार को केजरीवाल ने कहा कि मैंने प्रधानमंत्री मोदी सेई-20 फ्यूल की कीमत कम करने की अपील की है; क्योंकि ई-20 से माइलेज कम मिलता है, इसलिए इसकी कीमत भी कम होनी चाहिए... मैंने उनसे मिलने का समय भी मांगा है। उन्होंने ई-20 पेट्रोल की वजह से परेशानी झेल रहे लोगों से कहा कि वे अपनी बात डिजिटल प्लैटफ़ॉर्म पर रखें। उन्होंने ज़ोर दिया कि सरकार का ध्यान इस ओर खींचने के लिए लोगों की आवाज़ ज़रूरी है।

लालू यादव को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत

» सुप्रीम कोर्ट का जमानत रद्द करने से इनकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट से बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव को देवघर चारा घोटाले मामले में बड़ी राहत मिली, क्योंकि कोर्ट ने उनकी ज़मानत रद्द करने से इनकार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड हाई कोर्ट के आदेश पर रोक लगाने और सीबीआई की याचिका पर कोई आदेश देने से भी इनकार कर दिया। कोर्ट ने हाई कोर्ट से सुनवाई में तेज़ी लाने को कहा है।

जस्टिस एमएम सुंदरेश और पीबी वराले की बेंच ने मामले की सुनवाई की और हाई कोर्ट के आदेश में दखल देने से इनकार कर दिया, लेकिन साथ ही निर्देश दिया कि ट्रायल कोर्ट के फ़ैसले के ख़िलाफ़ यादव की अपील पर सुनवाई में तेज़ी लाई जाए। सुप्रीम कोर्ट ने ज़मानत रद्द करने की की अपील को ठुकरा दिया और लालू यादव

को ज़मानत देने वाले हाई कोर्ट के आदेश में दखल देने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने कहा कि वह हाई कोर्ट के आदेश में दखल नहीं देना चाहता, खासकर इसलिए क्योंकि तब से सात साल बीत चुके हैं। सीबीआई की अपील 18 की है। सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट को लालू यादव के मामले की सुनवाई में तेज़ी लाने का निर्देश दिया है। अर्ज़ी पहले दो बार खारिज हो चुकी थी। हालाँकि, बाद में हाई कोर्ट ने इस आधार पर ज़मानत दे दी कि उन्होंने अपनी सज़ा का 5० प्रतिशत हिस्सा पूरा कर लिया था-यह आधार तथ्यों के लिहाज़ से गलत था और इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया कि सज़ाएँ एक साथ नहीं चलनी थीं।

लालू यादव की ओर से पेश होते हुए, सीनियर वकील कपिल सिब्बल ने तर्क दिया कि क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की धारा 427, जो सज़ाओं के एक साथ या एक के बाद एक चलने से संबंधित है, केवल अंतिम फ़ैसले के चरण में लागू होगी, न कि सज़ा को अंतरिम रूप से रोकने पर विचार करते समय।इसके बाद, सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने संकेत दिया कि वह ज़मानत के आदेश पर दोबारा विचार करने के बजाय अपीलों पर तेज़ी से सुनवाई करने के पक्ष में है। बेंच ने कहा कि हमें ट्रायल में तेज़ी लानी होगी। अगर हम अपील पर तेज़ी से सुनवाई करें तो आपका क्या कहना है? हो सकता है कि हम चुनौती दिए गए आदेश में दखल न दें।

अमेरिका-ईरान जंग में भारतीय की गई जान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अमेरिका और ईरान के बीच एक बार फिर होर्मुज जलडमरूमध्य में युद्ध शुरू हो चुका है। जहां ईरान होर्मुज से गुजरने वाले जहाजों को नियंत्रित करने और अपने बताए मार्गों से गुजरने के लिए मजबूर करने के लिए उन पर हमला कर रहा है तो वहीं अमेरिका की तरफ से तेहरान की इस कोशिश पर लगाम लगाए जाने की भरसक कोशिश की जा रही है।

हालांकि, ईरान भी अब होर्मुज को पूरी तरह नियंत्रित करने पर अड़ा है। अमेरिका पर जवाबी कार्रवाई करते हुए ईरान ने पश्चिम एशिया में न सिर्फ उसके ठिकानों को निशाना

बनाया है, बल्कि होर्मुज में जहाजों-टैंकरों पर भी हमले जारी रखे हैं।

अगर हालिया हमलों की बात करें तो सोमवार (13 जुलाई) को संयुक्त अरब अमीरात ने कहा कि ईरान की मिसाइलो ने ओमान के जलक्षेत्र में उसके दो टैंकरों को निशाना बनाया। इस घटना में एक भारतीय क्रू सदस्य की मौत हुई है, जबकि आठ लोग घायल हुए हैं। इनमें चार गंभीर रूप से घायल हैं। इससे पहले रविवार को भी ईरान की तरफ से साइप्रस के झंडे वाले एक जहाज पर हमला किया गया था, जिसमें सवार 11 भारतीयों में से 10 को बचा लिया गया, जबकि एक भारतीय लापता बताया गया। भारतीय नाविकों वाले इन दो टैंकरों पर हुए हमले के बाद भारत के विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को ईरान के राजनयिक को तलब किया और इन घटनाओं को लेकर जवाब मांगा। अमेरिका-ईरान संघर्ष शुरू होने के बाद से यह पहला मौका नहीं है, जब भारतीय किसी हमले या उसकी वजह से जनित किसी दुर्घटना का शिकार हुए हैं।

धार भोजशाला : नमाज के लिए मुस्लिम पक्ष को दी जाए जगह

» धार भोजशाला केस में सुप्रीम कोर्ट का आदेश, हाईकोर्ट के फैसले पर रोक नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। धार भोजशाला विवाद में सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को अहम अंतरिम आदेश देते हुए मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के फैसले पर फिलहाल रोक लगाने से इनकार कर दिया हालांकि अदालत ने मुस्लिम पक्ष को राहत देते हुए निर्देश दिया कि हर शुक्रवार दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक परिसर के नजदीक नमाज के लिए एक उपयुक्त खुली जगह उपलब्ध कराई जाए।

साथ ही कोर्ट ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को इमारत की मौजूदा स्थिति में कोई बदलाव नहीं करने का निर्देश दिया. मामले की अगली सुनवाई तीन सप्ताह बाद होगी। चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली पीठ ने मुस्लिम पक्ष की याचिकाओं पर नोटिस जारी करते हुए कहा कि सभी पक्षों की सुविधा के अनुसार जल्द सुनवाई की जाएगी।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा